E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 129 | प्रयागराज, बुधवार 05 अगस्त, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

रिपोर्ट- खामेनेई के बेटे ने ईरानी राष्ट्रपति की ताकत घटाई,इस्लामिक फोर्स ज्यादा पॉवरफुल

अमेरिका से बातचीत भी आईआरजीसी चीफ करेंगे

तेहरान। ईरान में राष्ट्रपति मसूद पजशकियान के अधिकारों

में बड़ी कटौती की खबर सामने आई है। इजराइली चैनल-14 की रिपोर्ट के मुताबिक, सुप्रीम लीडर मुजतबा खामेनेई ने सुरक्षा और विदेश नीति से जुड़े अहम मामलों में राष्ट्रपति की भूमिका सीमित कर दी है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि राष्ट्रीय सुरक्षा, परमाणु कार्यक्रम और अमेरिका से बातचीत जैसे बड़े मुद्दों पर अब आईआरजीसी कमांडर अहमद वाहिदी का फैसला अंतिम माना जाएगा। यानी इन मामलों में राष्ट्रपति की मंजूरी निर्णायक नहीं रहेगी। रिपोर्ट के मुताबिक, पजशकियान लंबे समय से शिकायत कर रहे थे कि उनकी सरकार को बड़े फैसलों से दूर रखा जा रहा है। उन्होंने पहले इस्तीफे की पेशकश भी की थी। अब दावा किया जा रहा है कि सुप्रीम लीडर ने साफ कर दिया है कि रणनीतिक फैसले सेना की सलाह के मुताबिक ही लिए जाएंगे। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्सः-1. अमेरिका-ईरान वार्ता की तारीख और जगह अब तक तय नहींः अमेरिका और ईरान के बीच प्रस्तावित बातचीत को लेकर अभी तक तारीख और स्थान तय नहीं हुआ है। रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान और कतर संभावित मेजबान देशों के तौर पर चर्चा में हैं और दोनों देश मध्यस्थता की कोशिश कर रहे हैं। 2. ईरान की नई रणनीति- जंग नहीं, अमेरिका पर दबाव बढ़ानाः रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक, ईरान अब सीधी सैन्य जीत के बजाय समुद्री व्यापार, तेल आपूर्ति और अहम शिपिंग रूट्स पर दबाव बनाकर अमेरिका और उसके सहयोगियों की लागत बढ़ाने की रणनीति अपना रहा है। 3. ईरान का दावा- होर्मुज के ऊपर उड़ रहा रीपर ड्रोन मार गिरायाः आईआरजीसी ने दावा किया कि उसने होर्मुज स्ट्रेट के ऊपर उड़ रहे एमक्यू-9 रीपर ड्रोन को एयर डिफेंस सिस्टम से मार गिराया। हालांकि, यह नहीं बताया गया कि ड्रोन किस देश का था। 4. अमेरिका ईरान पर दबाव बढ़ाने के नए विकल्प तलाश रहाः सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिकी सेंट्रल कमांड (सेटकॉम) ने अपने सैन्य विश्लेषकों से ईरान पर दबाव बढ़ाने और उसे सजा देने के लिए नए सुझाव मांगे हैं। अधिकारियों ने इसे असामान्य कदम बताया है। 5. हूती धमकी के बाद 6 सऊदी सुपरटैंकरों ने रास्ता बदलाः यमन के हूती विद्रोहियों की धमकी के बाद छह सऊदी सुपरटैंकरों ने लाल सागर और बाब-अल-मंदेब के बजाय अफ्रीका के दक्षिणी हिस्से से लंबा समुद्री रास्ता अपनाया। इससे क्षेत्र में शिपिंग सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई।

साउथ कोरिया में इस सप्ताह सबसे ज्यादा गर्मी का रिकॉर्ड,अब तक 16 लोगों की मौत

सियोल। साउथ कोरिया में भीषण गर्मी से अब तक 16 लोगों की मौत हो चुकी है। देश के गृह मंत्रालय ने बताया कि 15

मई से 2 अगस्त के बीच 2,025 लोग गर्मी से जुड़ी बीमारियों का शिकार हुए, जिनमें 16 लोगों की जान गई। रविवार को यांगसान शहर में 42.5 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया, जो देश का अब तक का सबसे अधिक तापमान है। साउथ कोरिया में सबसे ज्यादा तापमान 1 अगस्त 2018 को 40.7डिग्री सेल्सियस को दर्ज किया गया था। इस साल यह रिकॉर्ड 3 बार टूटा है। 31 जुलाई को 41.4डिग्री सेल्सियस, 2 अगस्त को 41.6डिग्री सेल्सियस और 3 अगस्त को 42.5डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

एक्ट्रेस तृषा पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने का आरोप में तमिलनाडु के नेता विपक्ष उदयनिधि स्टालिन गिरफ्तार, बोले- बदले की भावना से कार्रवाई

चेन्नई। तमिलनाडु के नेता प्रतिपक्ष और डीएमके नेता

उदयनिधि स्टालिन को अभिनेत्री तृषा पर आपत्तिजनक टिप्पणी के मामले में मंगलवार को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने उनके खिलाफ 6 धाराओं में केस दर्ज किया है। गिरफ्तारी से बचने के लिए उदयनिधि ने मद्रास हाईकोर्ट में अग्रिम जमानत की अर्जी दाखिल की थी। हालांकि, उस पर सुनवाई होने से पहले ही पुलिस ने उन्हें अरेस्ट कर लिया। सोमवार को तंजावुर में कावेरी जल विवाद पर आयोजित रैली में उदयनिधि मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय पर निशाना साध रहे थे। इसी दौरान भीड़ से 'तृषा, तृषा' के नारे लगे। आरोप है कि इस पर उन्होंने कहा, 'पानी कहीं और पहुंचे या न पहुंचे, वहां जरूर पहुंचना चाहिए।' बाद में उन्होंने सफाई दी कि उनका इशारा कावेरी के पानी की ओर था। हालांकि, विपक्षी दलों ने इस टिप्पणी को डबल मीनिंग और महिलाओं का अपमान करने वाली बताया। इसी आरोप के आधार पर उनके खिलाफ मामला दर्ज किया गया।डीएमके नेता उदयनिधि स्टालिनः- 'मैंने कुछ भी गलत नहीं कहा। मैंने विजय के अलावा किसी का नाम नहीं लिया। यह बदले की भावना से की गई कार्रवाई है। अब फैसला अदालत करेगी।' एमएमके बोली- उदयनिधि की गिरफ्तारी राजनीतिक बदला-मणिथानेया मक्कल काची (एमएमके) के अध्यक्ष और विधायक एमएच जवाहिरुल्ला ने कहा कि उदयनिधि स्टालिन की गिरफ्तारी राजनीतिक बदले के तहत की गई। तमिलनाडु सरकार उन्हें रिहा करे। उदयनिधि पर महिला के अपमान समेत कई धाराओं पर केस-एफआईआर में उदयनिधि स्टालिन पर महिला की गरिमा का अपमान करने, जानबूझकर अपमान कर शांति भंग करने, अलग-अलग समूहों के बीच वैमनस्य फैलाने, आपराधिक साजिश रचने और आपराधिक धमकी देने जैसी धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। इसके अलावा उनके खिलाफ तमिलनाडु महिला उत्पीड़न निषेध अधिनियम, 2002 और सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) अधिनियम की धारा 67 के तहत भी केस दर्ज किया गया है।

हजारों वॉट्सएप अकाउंट अचानक बंद, अंडर रीव्यू का मैसेज आया,बिना वार्निंग सभी फीचर्स ब्लॉक

कंपनी बोली- कभी-कभी गलती हो जाती है

नयी दिल्ली। मैसेजिंग एप वॉट्सएप ने भारत समेत कुछ

अन्य देशों में हजारों यूजर्स के अकाउंट 24 घंटे के लिए रीव्यू में डाल दिए हैं। इस दौरान एप के सभी मैसेजिंग और कॉलिंग फीचर्स को ब्लॉक कर दिया गया। जब प्रभावित यूजर्स ने एप खोला तो स्क्रीन पर मैसेज लिखकर आया, 'अकाउंट इन रीव्यू। डेट रिक्वेस्टेडः 3 अगस्त 2026। आपकी अकाउंट एक्टिविटी और डिवाइस इंफो की जांच की जा रही है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह हमारी सेवा शर्तों का पालन करता है।' इस दिक्कत के बाद प्रभावित यूजर्स ने सोशल मीडिया पर अपनी शिकायतें दर्ज कराईं। मामले पर कंपनी के प्रवक्ता ने बयान जारी कर सफाई दी। कहा कि हम दूसरे यूजर्स की सिक्योरिटी के लिए ऐसा करते हैं। कभी-कभी गलती हो जाती है। इसे जल्दी सुधारेंगे। यह समस्या भारतीय समयानुसार सोमवार रात करीब 8 बजे सामने आई। मेटा ने यूजर्स को अकाउंट ब्लॉक करने या रीव्यू में डालने से पहले कोई वार्निंग या नोटिफिकेशन नहीं दिया था। 'अकाउंट इन रीव्यू' वाले मैसेज के ठीक नीचे वॉट्सएप ने दो विकल्प दिए हैं। पहला विकल्प 'जिम्मेदारी से वॉट्सएप का उपयोग कैसे करें' नाम से गाइडेंस देता है और दूसरा विकल्प 'चोरी हुए फोन और अकाउंट के बारे में' जानकारी के लिए है।

डाबर के '100फीसदी शुद्ध' दावे वाले प्रोडक्ट पर रोक, FSSAI ने शहद-घी समेत कई सामान बेचना बैन किया- 15 दिन में रिपोर्ट मांगी

नयी दिल्ली। डॉबर के कई प्रोडक्ट की बिक्री पर रोक लगा दी गई है। इनमें शहद और गाय

का घी भी शामिल है। ये प्रोडक्ट 100फीसदी शुद्धता के दावे के साथ बेचे जा रहे थे। यह रोक खाने-पीने के सामानों के मानक तय करने वाली सरकारी संस्था इएऐंघ ने लगाई है। फूड सेफ्टी एंड स्टेंडर्ड अथॉरिटी ऑफ इंडिया (FSSAI) ने इन दावों को गुमराह करने वाला बताया है। इस पर डाबर से 15 दिनों के भीतर रिपोर्ट मांगी है। सोमवार 3 अगस्त को FSSAI ने सोशल मीडिया के जरिए इस बात की जानकारी दी है।FSSAI के अनुसार, कंपनी की वेबसाइट पर बेचे जा रहे खाद्य पदार्थों पर भ्रामक दावे पाए गए थे। इनमें '100फीसदी नेचुरल', '100फीसदी प्योर', '100फीसदी प्योरिटी गारंटेड', '100फीसदी ऑर्गनिक' और '100फीसदी टेंडर कोकोनट वॉटर' जैसे लेबल शामिल थे। FSSAI का कहना है कि '100 प्रतिशत' दावों का यह उपयोग इएए विनियम, 2018 का उल्लंघन करता है। ये दावे अस्पष्ट, असत्यापित और उपभोक्ताओं को गुमराह करने वाले हैं। नियमों के अन्य बड़े उल्लंघन-'जैविक भारत' लोगोः डाबर हिमालयन ऑर्गनिक एप्पल साइडर विनेगर और डाबर ऑर्गनिक हनी पर बिना किसी वैध FSSAI ऑर्गनिक एंडोर्समेंट के 'जैविक भारत' लोगो पाया गया। कंपाउंड फूड्स पर गलत दावाः डाबर होममेड कोकोनट मिल्क को '100फीसदी Purity' के दावे के साथ बेचा जा रहा था। एफएसएस नियम, 2018 के तहत कंपाउंड फूड्स (मिश्रित खाद्य पदार्थों) के लिए ऐसा दावा करने की अनुमति बिल्कुल नहीं है। पहले भी दिया गया था नोटिस-इएऐंघ ने बताया कि उसने पहले भी डाबर को नोटिस जारी कर ऐसे भ्रामक '100फीसदी' दावों को तुरंत बंद करने का निर्देश दिया था। हालांकि, कंपनी ने कोई कदम नहीं उठाया। इसके बाद इएऐंघ को यह कड़ा प्रोहिबिशन (बैन) ऑर्डर जारी करना पड़ा। अब डाबर को 15 दिनों के अंदर यह बताना होगा कि उन्होंने FSSAI के आदेश के बाद क्या कदम उठाए हैं।

केजरीवाल ने पीएम आवास तक निकाला मार्च-पुलिस ने रोका,फिरोजशाह रोड पर धरने पर बैठे, बोले- ई20 के खिलाफ लाखों लोगों की चिट्ठियां सौंपेंगे

नयी दिल्ली। दिल्ली के पूर्व सीएम और आम आदमी पार्टी संयोजक अरविंद केजरीवाल ने

मंगलवार को ई20 फ्यूल के खिलाफ प्रधानमंत्री आवास तक मार्च निकला। हालांकि, दिल्ली पुलिस ने केजरीवाल, मनीष सिसोदिया, जैस्मिन शाह समेत पार्टी के अन्य नेताओं को फिरोजशाह रोड पर ही रोक दिया। इसके बाद केजरीवाल सहित अन्य आप नेता फिरोजशाह रोड पर ही बीच सड़क पर धरने पर बैठ गए। आप ने करीब 100 नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ यह मार्च निकाला था। पार्टी का दावा है कि उसने देशभर से 2.30 लाख से ज्यादा लोगों की याचिकाएं जुटाई हैं, जिन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सौंपना था। मार्च से दौरान केजरीवाल ने कहा कि ई20 के खिलाफ 2 लाख से ज्यादा लोगों ने प्रधानमंत्री को चिट्ठियां लिखी हैं, जिन्हें वे खुद प्रधानमंत्री को सौंपना चाहते हैं। केजरीवाल ने बताया कि उन्होंने प्रधानमंत्री को मैसेज भेजा है। उन्होंने कहा- हमें उम्मीद है कि पीएम हमसे मिलेंगे। आप संयोजक, पूर्व दिल्ली सीएमः-अमेरिका से एथेनॉल मंगाकर देश में ई20 लागू किया जा रहा है।इससे लोगों की गाड़ियों को नुकसान हो रहा है। पीएम को अमेरिकी दबाव में नहीं आना चाहिए और ई20 नीति वापस लेनी चाहिए- अरविंद केजरीवाल। केजरीवाल बोले- ई20 रोकने के लिए नीट से बड़ा आंदोलन करना होगा-ई20 के विरोध में धरने के दौरान अरविंद केजरीवाल ने आरोप लगाया कि ट्रम्प के दबाव में मोदी सरकार अमेरिका से एथनॉल खरीद रही है। अमेरिका दुनिया में सबसे ज्यादा एथनॉल बनाता है और उसने भारत पर इसे खरीदने का दबाव बनाया। केजरीवाल ने कहा- अमेरिका का कचरा खरीदकर हमारी 30 लाख गाड़ियों पर थोपा जा रहा है। इसे रोकने के लिए हमें नीट आंदोलन से भी बड़ा आंदोलन करना होगा। उन्होंने लोगों से इस अभियान में शामिल होने की अपील करते हुए कहा कि ई20 नीति के खिलाफ उनकी लड़ाई जारी रहेगी।

अमेरिका के 25 राज्य ट्रम्प के टैरिफ के खिलाफ पहुंचे कोर्ट, दावा- फोर्स्ड लेबर के नाम पर लगाया शुल्क अवैध

वॉशिंगटन। अमेरिका के 25 डेमोक्रेटिक पार्टी शासित राज्यों

ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के नए टैरिफ फैसले को अदालत में चुनौती दी है। राज्यों ने अमेरिकी कोर्ट ऑफ इंटरनेशनल ट्रेड में याचिका दाखिल कर इन टैरिफ को अवैध घोषित करने की मांग की है। फैसले के तहत ट्रम्प ने 60 अर्थव्यवस्थाओं पर नए टैरिफ लगाए गए हैं। ये 60 देश अमेरिकी आयात का 99.4 फीसदी हिस्सा हैं। याचिका में कहा गया है कि इस कदम से देश में महंगाई बढ़ जाएगी। पिछले महीने अमेरिका ने जबरन मजदूरी (फोर्स्ड लेबर) के मुद्दे पर 60 देशों पर 10 फीसदी से 12.5 फीसदी के बीच नए टैरिफ लगाए थे। भारत समेत 17 देशों पर 10 फीसदी की दर से टैरिफ लगाया गया है। डेमोक्रेटिक राज्यों का तर्क है कि प्रशासन ट्रेड एक्ट 1974 की धारा 301 का गलत इस्तेमाल कर रहा है। अटॉर्नी जनरल लेटिशिया जेम्स का कहना है कि अमेरिकी संविधान के अनुसार राष्ट्रपति के पास किसी भी देश पर मनमाने ढंग से टैरिफ लगाने की शक्ति नहीं है।

इथियोपिया में पवित्र जल लेने पहुंचे 14 लोगो की मौत

इथियोपिया। इथियोपिया के अम्हारा इलाके में भारी बारिश

के कारण सोमवार को हुए भूस्खलन में 14 लोगों की मौत हो गई और 7 अन्य घायल हो गए। कई लोग अभी भी लापता हैं। यह भूस्खलन त्सदकाने डेब्रे मिटमाक सेंट मैरी मठ में हुआ, जहां सैकड़ों श्रद्धालु पवित्र जल से शुद्धि की रस्म के लिए जमा हुए थे। डायोसिस के जनरल मैनेजर मेगाबे हादिस नेका तिबेब अबाबू ने एसोसिएटेड प्रेस को बताया- 'मरने वालों में से कई लोग पवित्र जल लेने के लिए जमा हुए थे।मरने वालों में से 11 लोगों को मठ में ही दफना दिया गया है, जबकि बाकी लोगों के शव उनके घर दिए गए हैं।'

लश्कर आतंकी बोला- भारतीय एजेंट्स ने हमारे 30 लोग मारे,पीओके में भी चैन से नहीं रहने दिया

इस्लामाबाद। इस्लामाबाद में लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े आतंकी रिजवान हनीफ ने दावा किया है कि पिछले तीन-चार साल में उनके संगठन के 30 से ज्यादा लोग मारे गए हैं। उसके मुताबिक ये हमले पेशावर, कराची, रावलपिंडी, रावलकोट और मुजफ्फराबाद में अज्ञात हमलावरों ने किए। उसने आरोप लगाया कि ये हमलावर भारतीय एजेंट्स थे। इससे जुड़ा एक वीडियो सामने आया है। इसमें हनीफ कहता है-'हमारे लोगों को भारतीय

खुफिया एजेंसियों ने आजाद कश्मीर में अमन और चैन से नहीं रहने दिया। अपने एजेंट्स के जरिए उन्होंने हमारे लोगो को शहीद किया।' पाकिस्तान पहले भी भारत पर ऐसे आरोप लगा चुका-पाकिस्तान पहले भी देश में आतंकियों की हत्याओं के लिए भारत पर आरोप लगाता रहा है। जनवरी 2024 में तत्कालीन विदेश सचिव मुहम्मद साइरस सज्जाद काजी ने दावा किया था कि भारतीय एजेंसियां पाकिस्तान में सीमा पार टारगेट किलिंग में शामिल हैं। भारत ने इन आरोपों को खारिज कर दिया था।इसके बाद अप्रैल 2024 में ब्रिटिश अखबार द गार्डियन की रिपोर्ट में दावा किया गया कि 2020 के बाद पाकिस्तान में करीब 20 आतंकियों और उग्रवादियों की अज्ञात हमलावरों ने हत्या की। इनमें लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और हिज्बुल मुजाहिदीन से जुड़े लोग भी शामिल बताए गए। रिपोर्ट में पाकिस्तानी अधिकारियों और कथित खुफिया सूत्रों के हवाले से इन घटनाओं के पीछे भारतीय एजेंसियों की भूमिका का दावा किया गया था। हालांकि, भारत के विदेश मंत्रालय ने इस रिपोर्ट को भी खारिज करते हुए इसे झूठा और भारत-विरोधी प्रचार बताया था। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भी कहा था कि दूसरे देशों में टारगेट किलिंग करना भारत सरकार की नीति नहीं है।

सोनभद्र में बिछेगा सड़कों का जाल, उद्योगों को मिलेगी रफ्तार,औद्योगिक लॉजिस्टिक योजना के तहत सोनभद्र में बनेंगी सबसे ज्यादा सड़कें

योगी सरकार ने दी सड़क निर्माण के 22 प्रस्तावों को मंजूरी, जिनमें 6 सोनभद्र के,202 करोड़ रुपये से होगा 127 किलोमीटर सड़कों निर्माण,जनप्रतिनिधियों व जिला प्रशासन के प्रयासों से मिली सफलता

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। प्रदेश की योगी सरकार औद्योगिक विकास की दिशा में युद्ध स्तर पर कार्य कर

रही है। प्रदेश में ज्यादा से ज्यादा उद्योगों को लगाने के साथ-साथ सरकार इंफ्रास्ट्रक्चर को भी तेजी से मजबूत कर रही है। इसी कड़ी में औद्योगिक लॉजिस्टिक योजना के तहत सरकार ने सड़क निर्माण के 22 प्रस्तावों को मंजूरी प्रदान की है। इन 22 प्रस्तावों में सबसे ज्यादा 6 प्रस्ताव सोनभद्र के हैं। इसके तहत लगभग 202 करोड़ रुपये खर्च कर छह सड़कों (कुल 127 किमी.) का निर्माण किया जाएगा। यह उपलब्धि जिला प्रशासन व जनप्रतिनिधियों की ओर से किए गए समयबद्ध प्रयासों का नतीजा है, जो सोनभद्र के विकास को नई दिशा देने में मील का पत्थर साबित होगा। जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने बताया कि उद्योगों को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए सरकार ने दूसरे जनपदों से जोड़ने वाली छह सड़कों के निर्माण को मंजूरी प्रदान कर दी है। उन्होंने बताया कि शासन ने औद्योगिक लॉजिस्टिक योजना के तहत सड़क निर्माण के कुल 22 प्रस्तावों को मंजूरी प्रदान की है। इन प्रस्तावों में सोनभद्र के सबसे ज्यादा 6 प्रस्तावों को मंजूरी मिली है। जिलाधिकारी ने बताया कि मुर्धवा- म्योरपुर-बभनी-चपकी-बौजपुर मार्ग का निर्माण 36.75 करोड़ रुपये की लागत से कराया जाएगा। नथिरा-धरतिडाड मार्ग का निर्माण 1.20 करोड़ रुपये की लागत से कराया जाएगा। वहीं, वाराणसी-शक्ति नगर स्टेट हाइवे का निर्माण का 41.79 करोड़ रुपये से कराया जाएगा। इसी तरह, डिबुलगंज-जोगेन्द्रा मार्ग का निर्माण 48.38 करोड़ रुपये, आरएस रोड से कोदरा टोला मार्ग तक सड़क का निर्माण 18.53 करोड़ रुपये की लागत से कराया जाएगा। चोपन-कोटा-कोन-करौंदी मार्ग का निर्माण 55.50 करोड़ रुपये की लागत से कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि सड़क निर्माण से जुड़े सभी संबंधित विभागों द्वारा सर्वे इत्यादि कार्यों को त्वरित गति से संपन्न किया गया। जिसके चलते जनपद में 6 सड़कों के निर्माण को स्वीकृति मिली है। कनेक्टिविटी से उद्योगों को लगेगे 'पंख'-जिलाधिकारी ने बताया कि इन सड़कों के निर्माण से उद्योगों को बेहतर कनेक्टिविटी उपलब्ध होगी। सड़क निर्माण के संबंध में जल्द टेंडर प्रक्रिया संपन्न कराने के साथ ही सड़क निर्माण कार्य शुरू कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि बेहतर कनेक्टिविटी से उद्योगों के लिए कच्चे माल और तैयार उत्पादों की ढुलाई का समय और लागत (लॉजिस्टिक्स कॉस्ट) कम हो जाएगी। प्रस्तावित सड़कों के निर्माण का लाभ उद्योगों के साथ-साथ आम-जनमानस को भी मिलेगा। अभी आवागमन में काफी समय लगता है लेकिन सड़क निर्माण के बाद मिनटों में यह सफर तय किया जा सकेगा साथ ही मार्ग में होने वली दुर्घटनाओं में भी कमी आएगी। इन सड़कों के निर्माण प्रस्ताव को भी जल्द मिलेगी स्वीकृति-जिलाधिकारी ने बताया कि औद्योगिक लॉजिस्टिक योजना 2026-27 के तहत स्वीकृति के लिए जनपद की 5 सड़कों के निर्माण संबंधी प्रस्ताव शासन को भेजे गए हैं। जिन्हें जल्द स्वीकृति मिलने की उम्मीद है। उन्होंने बताया कि डाला खन्ना कैंप से बिल्ली रोड़ तक टू लेन सड़क, खड़िया से तेलगढ़वा पुल (शक्तिनगर बार्डर) तक टू लेन सड़क व चुर्क सीमेंट फैक्ट्री तक आवागमन को सुगम बनाने के लिए दो लिंक रोड बनाने का प्रस्ताव भेजा गया है। भेजे गए प्रस्तावों में ओबरा डिग्री कॉलेज से नगर पंचायत, कार्यालय ओबरा तक सड़क के निर्माण के लिए प्रस्ताव भी शामिल हैं। इसके अलावा 16 करोड़ रुपये की लागत से मीना बाजार घुरमा फीडर से कुनिअवां टोला मार्ग के चौड़ीकरण का प्रस्ताव भी शासन को भेजा गया है।

निर्माणाधीन एवं प्रस्तावित परियोजनाओं में आने वाली बाधाओं को प्राथमिकता पर दूर करने के निर्देश

पम्प्ड स्टोरेज परियोजनाओं में तेजी लाने के लिए जिलाधिकारी ने की समीक्षा बैठक,भूमि, वन एवं राजस्व संबंधी प्रकरणों का समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद में प्रस्तावित एवं निर्माणाधीन पम्प्ड स्टोरेज

(पीएसपी) परियोजनाओं की प्रगति एवं विभिन्न विभागों से संबंधित प्रकरणों की समीक्षा हेतु जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न कंपनियों की परियोजनाओं की वर्तमान स्थिति, भूमि क्रय, वन एवं राजस्व संबंधी मामलों तथा अन्य आवश्यक अनुमतियों की विस्तार से समीक्षा की गई। बैठक के दौरान बताया गया कि ग्रीनको ग्रुप की 3000 मेगावाट क्षमता की पम्प्ड स्टोरेज परियोजना के लिए भूमि हेतु प्रभागीय वनाधिकारी रॉबर्ट्सगंज/ओबरा एवं उपजिलाधिकारी रॉबर्ट्सगंज/ओबरा को आवश्यक कार्यवाही हेतु पत्र प्रेषित किया जा चुका है। समीक्षा के दौरान आवाडा वाटर बैटरी लिमिटेड की पम्प्ड स्टोरेज परियोजना की प्रगति पर भी विस्तार से चर्चा की गई तथा परियोजना से जुड़े विभिन्न विभागीय प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने कहा कि पम्प्ड स्टोरेज परियोजनाओं से जुड़े वन एवं राजस्व विभाग के सभी प्रकरणों का गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने वन विभाग एवं राजस्व विभाग के अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि निर्माण कार्यों के अनुरूप आवश्यक एनओसी, स्वीकृतियां एवं अन्य विभागीय कार्यवाहियां निर्धारित समयसीमा के भीतर पूर्ण कराई जाएं, ताकि परियोजनाओं के निर्माण कार्य में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो।

जिलाधिकारी ने कहा कि प्रदेश सरकार जनपद सोनभद्र में ऊर्जा क्षेत्र के बड़े निवेश को प्राथमिकता दे रही है। ऐसे में सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय स्थापित करते हुए निवेशकों की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करें, जिससे परियोजनाएं निर्धारित समय में पूर्ण होकर प्रदेश की ऊर्जा क्षमता को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। बैठक में विभिन्न कंपनियों के प्रतिनिधिगण, प्रभागीय वनाधिकारी (ओबरा), महाप्रबंधक जिला उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन केंद्र विनोद कुमार चौधरी, उद्योग मित्र नितिन प्रकाश तथा संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

उद्योग एवं श्रमिक कल्याण में योगदान पर डॉ. विभा मिश्रा सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। उत्तर प्रदेश स्टेट

इंडस्ट्रियल एसोसिएशन (यूपीएसआईए) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अरविंद राय ने उद्योग, औद्योगिक विकास तथा उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के कल्याण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए एमएसएमई विशेषज्ञ एवं उद्यमिता प्रोत्साहक डॉ. विभा मिश्रा , परियोजना निदेशक एमएसईको उनके आवास पर जाकर धन्यवाद प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री राय ने कहा कि उद्योगों के विकास के साथ-साथ श्रमिकों के हितों की रक्षा और उनके कल्याण के लिए समाज के विभिन्न वर्गों का सहयोग अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने डॉ. विभा मिश्रा द्वारा एमएसएमई, स्वरोजगार, कौशल विकास तथा औद्योगिक जागरूकता के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए उनके प्रयासों को समाज और उद्योग जगत के लिए प्रेरणादायी बताया। सम्मान ग्रहण करते हुए डॉ. विभा मिश्रा ने यूपीएसआईए के राष्ट्रीय अध्यक्ष अरविंद राय एवं संगठन के सभी पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी उद्योगों के विकास, महिला उद्यमिता, युवाओं के कौशल विकास तथा औद्योगिक श्रमिकों के कल्याण के लिए वे पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करती रहेंगी। इस सम्मान समारोह के अवसर पर यूपीएसआईए के मीडिया प्रभारी डॉ. पुनीत अरोड़ा भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

अगस्त क्रांति और विश्व आदिवासी दिवस पर भाकपा और सहयोगी जनसंगठन का कलेक्ट्रेट मार्च आठ अगस्त को

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अगस्त क्रांति व विश्व

आदिवासी दिवस की पूर्व संध्या पर 8 अगस्त 2026 को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और अखिल भारतीय आदिवासी महासभा के कार्यकर्ताओं द्वारा सोनभद्र में उच्च शिक्षा के लिए कैमूर आदिवासी विश्वविद्यालय की स्थापना कराए जाने , जाति जनगणना में आदिवासी कोड लागू किए जाने, अन्य राज्यों की तरह ग्रामीण विकास के लिए यूपी में भी पेसा एक्ट लागू किए जाने तथा जल जंगल जमीन और आदिवासी हितों की रक्षा के लिए जैसे मांगों को लेकर चूर्क तिराहे से कलेक्ट्रेट मुख्य मार्ग गेट तक पैदल मार्च और उपरोक्त विभिन्न मांगों को लेकर प्रशासन को ज्ञापन दिए जाने के कार्यक्रम सुनिश्चित किया गया है। इस आशय की जानकारी भाकपा और आदिवासी महासभा के नेता कामरेड आर के शर्मा ने देते हुए बताया कि प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी अगस्त क्रांति और विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी व सहयोगी जनसंगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा लोकतांत्रिक और शांतिपूर्ण तरीके से दिनांक 8.अगस्त 2026 को चुर्क तिराहा से कलेक्ट्रेट के मुख्य द्वार तक पैदल मार्च करते हुए स्थानीय जनसमस्याओं के संदर्भ प्रशासन को ज्ञापन दिए जाने का कार्यक्रम पार्टी और संगठन द्वारा सुनिश्चित किया गया। यह कार्यक्रम नौ अगस्त को रविवार का दिन पड़ने की वजह से शनिवार यानी आठ अगस्त को ही किया जाएगा और उन्होंने इस कार्यक्रम में जनपद के युवाओं, छात्रों किसानों , मजदूरों और आदिवासी समाज के लोगों से अधिक से अधिक जुटान करने की अपील किया है।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली में संविदा आधारित आशुलिपिक पद हेतु आवेदन आमंत्रित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। प्रभारी सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली अमित मिश्रा ने बताया कि उ0प्र0

राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली में संविदा के आधार पर अस्थायी रूप से दो वर्ष की अवधि के लिए आशुलिपिक के एक रिक्त पद पर नियुक्ति की जानी है। उक्त पद के लिए नियत मानदेय रु10,730.00 प्रतिमाह अनुमन्य होगा। उन्होंने बताया कि इस पद हेतु ऐसे इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन कर सकते हैं, जो दीवानी न्यायालय अथवा कलेक्ट्रेट न्यायालय के सेवानिवृत्त कर्मचारी हों तथा जिनकी आयु 65 वर्ष से अधिक न हो। इच्छुक अभ्यर्थी अपना आवेदन, मोबाइल नंबर सहित अन्य आवश्यक वैयक्तिक विवरण के साथ, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली के कार्यालय में 10 अगस्त 2026 को सायं 5:00 बजे तक प्रस्तुत कर सकते हैं।

एडीएम ने संभावित बाढ़ के दृष्टिगत गेगासो घाट का निरीक्षण,अधिकारियों को सतर्कता एवं त्वरित कार्रवाई के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी

सरनीत कौर ब्रोका के निर्देशानुसार अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) सहदेव मिश्र तहसीलदार लालगंज शिवम राठौर एवं जिला आपदा विशेषज्ञ अंकित पाण्डेय द्वारा तहसील लालगंज स्थित गेगासो घाट का स्थलीय निरीक्षण कर बाढ़ संबंधी तैयारियों का विस्तृत जायजा लिया गया। निरीक्षण के दौरान नदी के जलस्तर, घाटों की सुरक्षा व्यवस्था, संभावित संवेदनशील स्थलों, बाढ़ शरणस्थलों (फ्लड शेल्टर), बाढ़ चौकियों, चेतावनी एवं सूचना तंत्र, नावों एवं बचाव उपकरणों की उपलब्धता तथा आपदा की स्थिति में त्वरित राहत एवं बचाव कार्यों की तैयारियों की समीक्षा की गई। अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) ने तहसीलदार लालगंज को निर्देशित किया कि नदी के जलस्तर पर 24 बाई 7 सतत निगरानी रखी जाए तथा किसी भी प्रकार की जलस्तर वृद्धि की सूचना तत्काल उच्चाधिकारियों एवं संबंधित विभागों को उपलब्ध कराई जाए। समस्त बाढ़ शरणस्थलों एवं बाढ़ चौकियों को पूर्णतः सक्रिय एवं अलर्ट रखा जाए तथा नाव, गोताखोर, राजस्व, पुलिस एवं अन्य संबंधित विभागों के मध्य समन्वय स्थापित रखते हुए किसी भी आपात स्थिति में त्वरित राहत एवं बचाव कार्य सुनिश्चित किया जाए।उन्होंने निर्देश दिए कि घाटों पर अनावश्यक भीड़ एकत्र न होने दी जाए, संवेदनशील स्थलों पर पर्याप्त बैरिकेडिंग एवं चेतावनी संकेतक लगाए जाएँ तथा आमजन को नदी के तेज बहाव एवं गहरे पानी में प्रवेश न करने के प्रति लगातार जागरूक किया जाए।

संभावित बाढ़ की स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूर्ण सतर्कता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें, जिससे जन-धन की किसी भी प्रकार की हानि न होने पाए तथा आवश्यकता पड़ने पर राहत एवं बचाव कार्य तत्काल प्रारंभ किए जा सकें।

नई बेंच में पहुंचा 69 हजार शिक्षक भर्ती मामला

लखनऊ। 69 हजार सहायक शिक्षक भर्ती मामले में सुप्रीम कोर्ट में अब अगली सुनवाई 11 अगस्त को तय की है। मंगलवार को मामले पर पहली बार नई बेंच के समक्ष सुनवाई हुई। इससे पहले यह केस जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस शील नागू की बेंच में चल रहा था। अब मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) ने नियमित सुनवाई के लिए जस्टिस एस.वी.एन. भट्टी और जस्टिस एन.वी. अंजारिया की विशेष बेंच तय कर दी है।

चढ़ावा चोरी के 2 महीने बाद अयोध्या में चंपत राय,बोले- अंतिम सांस तक यहीं रहूंगा

अयोध्या। राम मंदिर चढ़ावा चोरी के करीब दो महीने बाद चंपत राय मंगलवार को अयोध्या में नजर आए। वह तपस्वी छावनी मंदिर पहुंचे, जहां पीठाधीश्वर जगद्गुरु परमहंस आचार्य ने उनका तिलक लगाकर स्वागत किया। दोनों के बीच बंद कमरे में बातचीत भी हुई। इसके बाद परमहंस आचार्य ने कहा- चंपत राय जी युग ऋषि हैं। हम लोगों ने उनसे निवेदन किया कि आप अयोध्या धाम मत छोड़िए। उन्होंने हमारा निवेदन स्वीकार किया और कहा कि अंतिम सांस तक मैं अयोध्या में रहूंगा। राम मंदिर के चढ़ावे में चोरी का मामला जून, 2026 में सामने आया था। इसके बाद यूपी सरकार ने एसआईटी गठित कर जांच शुरू की। एसआईटी की अंतरिम रिपोर्ट के आधार पर एफआईआर दर्ज हुई। अब तक आठ आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। मामले के बाद चंपत राय ने श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ ट्रस्ट के महासचिव पद से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने कहा था कि जांच पूरी होने के बाद ही वह इस मामले पर विस्तार से अपनी बात रखेंगे। परमहंस आचार्य से कहा, अंतिम सांस तक अयोध्या में रहूंगा-जगद्गुरु परमहंस आचार्य ने कहा- चंपत राय जी आज अयोध्या में संतों की सबसे पुरानी छावनी, तपस्वी जी की छावनी आए। वह सभी साधु-संतों से मिल रहे हैं। इसी क्रम में वह हमसे भी मिलने आए। वैदिक विधि से उनका सम्मान किया गया। हमने चंपत राय जी से कहा कि अयोध्या धाम मत छोड़िए। उन्होंने इस पर कहा कि मेरा कहीं भी आना-जाना होगा, लेकिन अयोध्या ही मेरा निवास रहेगा। मैं जीवनभर यहीं रहूंगा। उन्होंने हमारा निवेदन स्वीकार किया। इससे हम सभी बहुत खुश हैं। जो उल्लू और चमगादड़ प्रकृति के लोग हैं, वे सूर्य का महत्व नहीं जान सकते। उसी तरह पूरा सनातन समाज चंपत राय का सम्मान करता है। कुछ लोग राजनीतिक स्वार्थ के कारण उनका विरोध कर रहे हैं। उनके नेतृत्व में भव्य राम मंदिर का निर्माण हुआ है। चंपत राय ने खुद पर लगे आरोपों को बेबुनियाद बताया था-चंपत राय ने 26 जून, 2026 श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव पद से इस्तीफा दिया था। 6 जुलाई को राम मंदिर में ट्रस्ट की बैठक हुई। इसमें चंपत राय के इस्तीफे को स्वीकार कर लिया गया। चंपत राय की जगह नए ट्रस्टी रिटायर्ड आईएफएस कृष्ण मोहन को कार्यवाहक महासचिव बनाया गया। बैठक के बाद कोषाध्यक्ष गोविंद देव गिरी ने कहा था-'चंपत राय ने कहा है कि जब तक अपराधी पकड़े नहीं जाते तब तक पद पर रहना सही नहीं है। जो हुआ वह कष्टदायी है। इससे हम सब दुखी हैं। चढ़ावा चोरी लज्जाजनक घटना है।' इसके अगले दिन 7 जुलाई को उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर राम भक्तों के नाम एक पत्र लिखकर अपने ऊपर लगे आरोपों को बेबुनियाद बताया था। उन्होंने कहा था कि वह एसआईटी की जांच पूरी होने के बाद ही इस मामले पर विस्तार से अपनी बात रखेंगे।

40 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद, 400 किलो लहन नष्ट व 02 अभियोग पंजीकृत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी

सरनीत कौर ब्रोका के आदेशानुसार जनपद में अवैध शराब के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष प्रवर्तन अभियान के तहत आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-1 प्रशांत कुमार ने अपनी टीम के साथ विभिन्न स्थानों पर सघन दबिश दी। कार्रवाई के दौरान सदर तहसील के थाना मिल एरिया अंतर्गत ग्राम राही ग्राम सभा तथा थाना गुरुबक्सगंज क्षेत्र के कोरिहर गांव में अवैध कच्ची शराब बनाने के अड्डों एवं संदिग्ध घरों की तलाशी ली गई। अभियान के दौरान कुल 40 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद की गई तथा लगभग 400 किलो लहन बरामद कर मौके पर ही नष्ट कर दिया गया।

इस कार्रवाई के संबंध में आबकारी अधिनियम के तहत 02 अभियोग पंजीकृत किए गए। आबकारी विभाग ने स्पष्ट किया है कि जनपद में अवैध शराब के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी के विरुद्ध अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा।

बधिर शतरंज खिलाड़ियों का राष्ट्रीय बधिर शतरंज चैम्पियनशिप हेतु चयन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। हमें यह बताते हुए कि प्रयागराज बधिर कल्याण ट्रस्ट के सदस्य एवं राज्य के

अत्यंत हर्ष हो रहा है कि प्रयागराज बधिर कल्याण ट्रस्ट द्वारा डेफ एसोसिएशन ऑफ उत्तर प्रदेश के सहयोग से आयोजित चयन प्रक्रिया के अंतर्गत 2 अगस्त 2026 को श्री लक्ष्मी व्यायाम मंदिर इंटर कॉलेज, झांसी में आयोजित तृतीय राज्य बधिर शतरंज चैम्पियनशिप में प्रयागराज के दो सदस्यीय दल ने प्रतिभाग किया। प्रयागराज बधिर कल्याण ट्रस्ट की स्थापना वर्ष 2005 में की गई थी। संस्था निरंतर बधिर खिलाड़ियों के बीच शतरंज खेल को प्रोत्साहित करने तथा बधिर समुदाय के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य कर रही है। यह प्रतियोगिता अत्यंत प्रतिष्ठित मानी जाती है, क्योंकि राज्य स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों का चयन 17 से 21 सितम्बर 2026 तक नई दिल्ली में आयोजित होने वाली 26वीं राष्ट्रीय बधिर शतरंज चैम्पियनशिप में प्रतिभाग करने हेतु किया जाता हैं। हमें गर्व है प्रतिभाशाली खिलाड़ी श्री आशुतोष शुक्ल ने प्रथम स्थान प्राप्त कर राष्ट्रीय चैम्पियनशिप के लिए अपना स्थान सुनिश्चित किया है।

अब वे उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। हमें पूर्ण विश्वास है कि वे उत्कृष्ट प्रदर्शन कर प्रदेश एवं प्रयागराज का नाम गौरवान्वित करेंगे। इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर प्रयागराज फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री शशांक शेखर पांडेय ने प्रयागराज बधिर कल्याण ट्रस्ट के महामंत्री श्री राम रघुबीर मिश्र, इंटरप्रेटर सुश्री वैष्णवी सिंह, उत्तर प्रदेश डेफ आर्ट्स एंड कल्चरल सोसाइटी के अध्यक्ष श्री मदन मोहन श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष श्रीमती लता कुमारी, उपाध्यक्ष श्री नीरज सिंह सहित समस्त पदाधिकारियों एवं खिलाड़ियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रदान की हैं।

भंते धम्म रतन कौशाम्बी को भेंट किया गया बुद्ध के जीवन चरित पर आधारित प्रबंध काव्य बुद्ध चरित मानस

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) कौशाम्बी। भगवतपुर जनपद जोड़े गये हैं। प्रबंध काव्य में 400 से भी कुछ ज़्यादा पेज हैं। दोहा

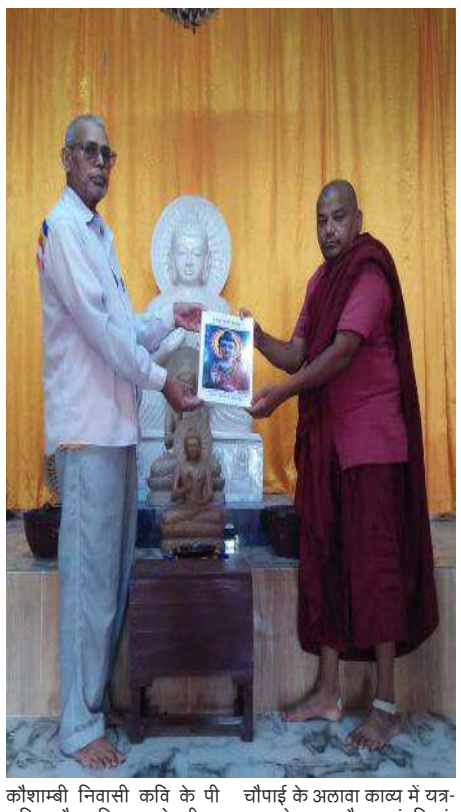

कौशाम्बी निवासी कवि के पी सविता बौद्ध रचित बुद्ध के जीवन चरित पर आधारित प्रबंध काव्य बुद्ध चरित मानस की एक प्रति धम्म मित्र बुद्ध विहार कौशाम्बी के बौद्ध धर्म गुरु भंते धम्म रतन को खुद कवि द्वारा भेंट की गयी। ज्ञातव्य है कि यह प्रबंध काव्य भगवान बुद्ध के जीवन चरित पर आधारित दोहा चौपाई शैली में लिखा गया है जिसमें बुद्ध के सिद्धार्थ के रूप में जन्म लेने से लेकर बुद्ध के महापरिनिर्वाण तक की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख किया गया है। इसके साथ ही बुद्ध के कई प्रमुख शिष्यों के संबंध में भी कई प्रमुख अंश यत्र-तत्र चौपाई के अलावा काव्य में यत्र-तत्र सोरठा, सवैया, कुंडलियां, हरिगीतिका, गीतिका, वीर छंद, रोला,इन्द्रवज्जा, कवित्त शशिवदना, कवित्त, आभीर, आदि का प्रयोग मिलता है। ग्रंथ के अंत में बुद्ध चरित मानस की आरती का भी समावेश किया गया है। यह बुद्ध चरित मानस प्रबंध काव्य कवि ने अपने बौद्ध दीक्षा गुरु भंते भदंत दीपांकर महास्थविर विहाराध्यक्ष, बुद्ध विहार साधना केंद्र संस्थान जूही बबुरहिया कानपुर व प्रांतीय अध्यक्ष अखिल भारतीय भिक्षु संघ शाखा उत्तर प्रदेश के नाम पर समर्पित किया है।

ऑपरेशन के बाद कैंसर मरीज ने अस्पताल की छत से लगाई छलांग, वाराणसी के कैंसर संस्थान में हड़कंप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वाराणसी। उत्तर प्रदेश के उपचाराधीन था। बताया जा रहा है कि किसी समय वह अस्पताल रही है, ताकि घटना के वास्तविक कारणों का पता लगाया जा सके।

वाराणसी स्थित महामना मदन मोहन मालवीय कैंसर संस्थान से एक बेहद दुखद और चिंताजनक घटना सामने आई है। संस्थान में भर्ती एक कैंसर मरीज ने ऑपरेशन के बाद अस्पताल की छत से कूदकर कथित रूप से आत्महत्या कर ली। घटना के बाद अस्पताल परिसर में हड़कंप मच गया और मरीजों व परिजनों में दहशत का माहौल बन गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, मरीज का हाल ही में ऑपरेशन हुआ था और वह की ऊपरी मंजिल पर पहुंच गया और वहां से छलांग लगा दी। गंभीर रूप से घायल मरीज को तत्काल चिकित्सकीय सहायता दी गई, लेकिन उसकी जान नहीं बच सकी। घटना की सूचना मिलते ही चितईपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। पुलिस अस्पताल प्रशासन, चिकित्सकों, कर्मचारियों तथा परिजनों से पूछताछ कर रही है। साथ ही अस्पताल में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज भी खंगाली जा फिलहाल यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि मरीज ने यह कदम किन परिस्थितियों में उठाया। पुलिस सभी पहलुओं की जांच कर रही है और पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। इस घटना ने गंभीर बीमारियों से जूझ रहे मरीजों के मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक सहयोग और अस्पतालों में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर भी कई सवाल खड़े कर दिए हैं। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच जारी है और सभी तथ्यों के सामने आने के बाद ही स्थिति स्पष्ट हो पाएगी।

श्रावण में रुद्राभिषेक से मिलती है सुख-समृद्धिःस्वामी पंचमानंद जी महाराज

रुद्राभिषेक से प्रसन्न होते हैं भगवान शिव, जीवन होता है सुखमय : स्वामी पंचमानंद जी महाराज,श्रावण में शिव आराधना और रुद्राभिषेक से मिलता है सुख-शांति का आशीर्वाद : स्वामी पंचमानंद जी महाराज,श्रावण मास में शिवभक्ति अपनाएं, रुद्राभिषेक से जीवन बने सुखमय : स्वामी पंचमानंद जी महाराज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। श्रावण मास के पावन अवसर पर परम पूज्य, अनंत श्री विभूषित महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी पंचमानंद जी महाराज ने श्रद्धालुओं को भगवान शिव के रुद्राभिषेक का विशेष महत्व बताते हुए सभी सम्मानित गुरु भाई-बहनों से रुद्राभिषेक करने का आह्वान किया। अपने संदेश में उन्होंने कहा कि श्रावण मास भगवान शिव की आराधना का सर्वोत्तम समय है। इस पावन मास में श्रद्धा एवं विधि-विधान से रुद्राभिषेक करने से भगवान भोलेनाथ की कृपा प्राप्त होती है तथा जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। स्वामी पंचमानंद जी महाराज ने कहा

कि गुरुदेव की प्रेरणा से प्रत्येक श्रद्धालु को श्रावण मास में नियमित रूप से शिव पूजन, रुद्राभिषेक, जप एवं सेवा के कार्यों में भाग लेना चाहिए। इससे व्यक्ति का जीवन सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण होता है और परिवार में सुख-समृद्धि का वास होता है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से आह्वान किया कि इस पवित्र श्रावण मास में अधिक से अधिक संख्या में भगवान शिव का रुद्राभिषेक करें, धर्म के मार्ग पर चलें तथा समाज में प्रेम, सद्भाव और आध्यात्मिक चेतना का संदेश प्रसारित करें।

I.G.R.S. रैंकिंग में सीतापुर पुलिस का स्वर्णिम प्रदर्शन, उत्तर प्रदेश में जनपद को मिला प्रथम स्थान, सभी 28 थाने भी रहे अव्वल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सीतापुर। उत्तर प्रदेश शासन की मंशा के अनुरूप आमजन की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी और गुणवत्तापूर्ण निस्तारण की दिशा में सीतापुर पुलिस ने एक शिकायत निस्तारण के सभी कड़े मानकों का शत-प्रतिशत पालन किया, जिसके परिणामस्वरूप जनपद में डिफाल्टर संदर्भों की संख्या शून्य (0.00 प्रतिशत) दर्ज की गई। सीतापुर पुलिस की कार्रवाई और समाधान पर पूर्ण संतोष व्यक्त किया। इस प्रकार सीतापुर पुलिस ने 93.15 प्रतिशत का उच्च संतोषजनक फीडबैक दर्ज कराया, जो प्रदेश के अन्य जनपदों के लिए

नया आयाम स्थापित किया है। पुलिस अधीक्षक श्री अंकुर अग्रवाल के कुशल नेतृत्व और सूक्ष्म पर्यवेक्षण में सीतापुर पुलिस ने मुख्यमंत्री जनसुनवाई प्रणाली (आईजीआरएस) तथा समेकित शिकायत निवारण प्रणाली पर प्राप्त आवेदनों के निस्तारण में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए माह जुलाई-2026 की प्रदेश स्तरीय आईजीआरएस रैंकिंग में पहला स्थान (रैंक-1) प्राप्त किया है। शासन द्वारा जारी मूल्यांकन रिपोर्ट में जनपद सीतापुर पुलिस को कुल 125 में से 125 अंक (100 प्रतिशत) प्राप्त हुए हैं, इस ऐतिहासिक सफलता के पीछे शिकायतों का समयबद्ध और न्यायपूर्ण निस्तारण सबसे प्रमुख आधार रहा है। मूल्यांकन अवधि के दौरान सीतापुर पुलिस ने इस उपलब्धि की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि यह प्रदर्शन केवल जिला मुख्यालय या किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि पूरे जनपद में एकसमान दिखाई दिया। मूल्यांकन प्रणाली के अंतर्गत जनपद के समस्त 28 थानों के प्रदर्शन को शामिल किया गया था, और सभी 28 थानों ने 100 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रदेश में प्रथम श्रेणी हासिल की है। शिकायत निस्तारण प्रक्रिया का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू पीड़ितों और आवेदकों की संतुष्टि होता है, जिसमें सीतापुर पुलिस का प्रदर्शन बेहद सराहनीय रहा है। समीक्षा अवधि के दौरान आईजीआरएस पोर्टल के माध्यम से प्राप्त कुल 7,385 शिकायतों में से 6,879 आवेदकों ने पुलिस द्वारा की गई भी एक अनुकरणीय उदाहरण है। आवेदकों द्वारा दर्ज कराया गया यह विश्वास सीतापुर पुलिस की निष्पक्ष और जन-केंद्रित कार्यप्रणाली को प्रमाणित करता है।

इस अभूतपूर्व और गौरवपूर्ण उपलब्धि पर पुलिस अधीक्षक श्री अंकुर अग्रवाल एवं अपर पुलिस अधीक्षक (दक्षिण)/नोडल अधिकारी आईजीआरएस श्री दुर्गेश कुमार सिंह ने आईजीआरएस सेल प्रभारी (निरीक्षक राय सिंह), उनकी पूरी टीम, समस्त क्षेत्राधिकारियों, थाना प्रभारियों तथा इस कार्य में संलग्न सभी पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों के समर्पित प्रयासों की मुक्तकंठ से सराहना की और उन्हें हार्दिक बधाई दी।

बड़ी खबरः यौन उत्पीड़न मामले में बृजभूषण शरण सिंह बरी, अदालत ने सुनाया फैसला

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नई दिल्ली। महिला पहलवानों

द्वारा लगाए गए यौन उत्पीड़न के चर्चित मामले में दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने पूर्व भाजपा सांसद एवं भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्लूएफआई) के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह को बरी कर दिया है। अदालत ने सह-आरोपी विनोद तोमर को भी आरोपों से मुक्त कर दिया। करीब तीन वर्षों से चर्चा में रहे इस मामले में अदालत ने कहा कि अभियोजन पक्ष आरोपों को संदेह से परे साबित करने में सफल नहीं रहा। इसी आधार पर दोनों आरोपियों को दोषमुक्त कर दिया गया। यह मामला वर्ष 2023 में उस समय राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में आया था, जब कई महिला पहलवानों ने बृजभूषण शरण सिंह पर यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए थे। इसके बाद दिल्ली के जंतर-मंतर पर विनेश फोगाट, साक्षी मलिक और बजरंग पुनिया सहित कई खिलाड़ियों ने लंबा आंदोलन किया था। फैसले के बाद बृजभूषण शरण सिंह ने इसे अपनी बेगुनाही की जीत बताते हुए कहा कि उन्हें न्यायपालिका पर पूरा भरोसा था और उन्होंने कभी खुद को दोषी नहीं माना। वहीं दूसरी ओर पहलवानों ने अदालत के फैसले से असहमति जताई है। विनेश फोगाट और बजरंग पुनिया ने संकेत दिया है कि वे इस फैसले को उच्च अदालत में चुनौती देंगे और कानूनी लड़ाई जारी रखेंगे। मुख्य बिंदुः-बृजभूषण शरण सिंह और विनोद तोमर बरी। अदालत ने पर्याप्त साक्ष्य न होने का हवाला दिया। 2023 में महिला पहलवानों के आरोपों के बाद शुरू हुआ था मामला। पहलवानों ने हाई कोर्ट में चुनौती देने के संकेत दिए। मामला अभी सार्वजनिक और राजनीतिक बहस का विषय बना हुआ है।

एमएसएमई राज्य मंत्री हंसराज विश्वकर्मा का जन्मदिवस मनाया, उद्योग कल्याण पर हुई सार्थक चर्चा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। उत्तर प्रदेश स्टेट इंडस्ट्रियल एसोसिएशन (UPSIA) की

इंडस्ट्रियल एसोसिएशन (UPSIA) के लखनऊ चैप्टर द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार के एमएसएमई राज्य मंत्री श्री हंसराज विश्वकर्मा का जन्मदिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंत्री जी को जन्मदिवस की शुभकामनाएँ देते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना की गई। कार्यक्रम के दौरान UPSIA लखनऊ चैप्टर के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र विश्वकर्मा ने मंत्री जी को गतिविधियों, उद्देश्यों तथा प्रदेश के औद्योगिक विकास में संगठन की भूमिका से अवगत कराया। साथ ही उद्योगों के कल्याण, एमएसएमई क्षेत्र की चुनौतियों एवं औद्योगिक विकास को गति देने से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। इस अवसर पर डॉ. अरुण शर्मा, प्रणव श्रीवास्तव, अमरनाथ शर्मा एवं राधेश्याम विश्वकर्मा भी उपस्थित रहे और सभी ने उद्योग हित से जुड़े मुद्दों पर अपने विचार साझा किए। ये कार्यक्रम यूपीएसआईए की राष्ट्रीय कार्यसमिति के पदाधिकारी UPSIA के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अरविंद राय, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री के. खान तथा राष्ट्रीय मीडिया अधिकारी डॉ. पुनीत अरोड़ा के दिशानिर्देश पर किया. कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ तथा उद्योग जगत के विकास एवं एमएसएमई क्षेत्र को और अधिक सशक्त बनाने के लिए सरकार एवं UPSIA के बीच निरंतर सहयोग बनाए रखने पर सहमति व्यक्त की गई।

भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ में संजय शुक्ला बने नोएडा महानगर अध्यक्ष

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ ने वरिष्ठ पत्रकार संजय

शुक्ला को नोएडा महानगर अध्यक्ष नियुक्त किया है। उनकी नियुक्ति से पत्रकारिता जगत में खुशी की लहर है। संजय शुक्ला के महानगर अध्यक्ष बनने की सूचना मिलते ही पत्रकारों, सामाजिक संगठनों एवं शुभचिंतकों ने उन्हें फोन, सोशल मीडिया और व्यक्तिगत रूप से शुभकामनाएं एवं बधाइयाँ दीं। इस अवसर पर संजय शुक्ला ने भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संगठन ने उन पर जो विश्वास व्यक्त किया है, उस पर वह पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ खरा उतरने का प्रयास करेंगे।

उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती, पत्रकारों के हितों की रक्षा तथा उनकी समस्याओं के समाधान के लिए निरंतर कार्य किया जाएगा। उनकी नियुक्ति पर पत्रकारों एवं शुभचिंतकों ने उज्ज्वल कार्यकाल की शुभकामनाएँ देते हुए विश्वास जताया कि उनके नेतृत्व में संगठन नोएडा में और अधिक सशक्त एवं सक्रिय होगा।

स्थायी लोक अदालत के अध्यक्ष पद हेतु करें आवेदन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। प्रभारी सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण

रायबरेली अमित मिश्रा ने बताया है कि उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निर्देशानुसार जनपद आजमगढ़, बलरामपुर, महोबा, संत कबीर नगर, पीलीभीत, अलीगढ़, एटा एवं मथुरा में धारा 22-बी, विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987 के तहत स्थापित स्थायी लोक अदालत (पीएलए) के अध्यक्ष पद पर चयन एवं नियुक्ति के लिए पात्र भारतीय नागरिकों से आवेदन आमंत्रित हैं। आवेदन की अंतिम तिथि 24 अगस्त 2026 को सायं 05:00 बजे तक हैं।

आपदा प्राधिकरण ने लोगों को किया जागरूक,बाजार में राहत चौपाल का आयोजन

सोनभद्र। जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने निगाई ग्राम

पंचायत के बोकराखड़ी (सोमवार साप्ताहिक बाजार) में एक राहत चौपाल का आयोजन कर ग्रामीणों को आपदाओं के प्रति जागरूक किया। यह अभियान जिला आपदा विशेषज्ञ अरुण कुमार यादव के निर्देशन में चलाया गया। आपदा प्रबंधन विभाग के मास्टर ट्रेनर अनुज कुमार, सिकंदर प्रसाद और आपदा मित्र अमर सिंह ने ग्रामीणों को सर्पदंश की घटनाओं से बचाव के तरीके बताए। उन्होंने कहा कि सर्पदंश होने पर बिना समय गंवाए सरकारी अस्पताल जाना चाहिए, क्योंकि समय पर इलाज से जान बचाई जा सकती है। झाड़-फूंक के चक्कर में पड़ने से स्थिति गंभीर हो सकती है। विशेषज्ञों ने सलाह दी कि पीड़ित व्यक्ति को किसी भी प्रकार की शारीरिक क्रिया न करने दें और उसकी घबराहट दूर करें, क्योंकि घबराहट से शरीर में जहर तेजी से फैलता है। कटे हुए स्थान पर छेड़छाड़ न करें, बल्कि साबुन और पानी से धोएं। घाव के आसपास से घड़ी, कड़ा, अंगूठी जैसी चीजें तुरंत उतार दें। आकाशीय बिजली से बचाव के उपाय भी बताए गए। ग्रामीणों को पेड़ों के नीचे शरण न लेने और पक्के मकानों में आश्रय लेने की सलाह दी गई। यदि कोई पक्का मकान उपलब्ध न हो, तो खुले स्थान पर उकड़ू पोजीशन में बैठ जाना चाहिए। यात्रा के दौरान गाड़ी में ही रहें और खिड़कियों, दरवाजों, बरामदों तथा छत से दूर रहें। इसके अतिरिक्त, बिजली के सुचालक वस्तुओं, तालाबों और जलाशयों से दूर रहने की हिदायत दी गई। समूह में खड़े होने के बजाय अलग-अलग खड़े रहें। खेत-खलिहान में होने पर पैरों के नीचे लकड़ी, प्लास्टिक, बोरा या सूखे पत्ते रख लें। धातु से बने कृषि यंत्रों से दूर रहे और घायल व्यक्ति को तत्काल नजदीकी चिकित्सा केंद्र ले जाएं। इस चौपाल में डूबना, बाढ़, भूकंप, आंधी-तूफान और सड़क दुर्घटना जैसी अन्य आपदाओं के बारे में भी जागरूकता फैलाई गई। इस जागरूकता अभियान में कन्हाई पटेल, मोहम्मद दिलशाद, शिवकुमार चेरो, अफरोज अली, भोला प्रजापति, राम विनय यादव, कमलेश यादव, मंगरु गोड, मत्येंद्र नाथ यादव, नागवंत पटेल, शिवकुमार गोड, शिवकुमार चेरो सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित रहे।

पांच दिन से जला हुआ हैं ट्रांसफार्मर, ग्रामीणों में आक्रोश

सोनभद्र। रॉबर्ट्सगंज विकास खंड के ग्राम पंचायत

बेलकप के राजस्व गांव बगनार में पांच दिन पहले आकाशीय बिजली गिरने से 63 केवीए का ट्रांसफार्मर जल गया। इससे 50 से अधिक गांवों में बिजली आपूर्ति ठप हो गई है, जिससे ग्रामीणों का रोजमर्रा का काम प्रभावित हो रहा है। मंगलवार सुबह ग्रामीणों ने जले हुए ट्रांसफार्मर के पास विद्युत विभाग के खिलाफ प्रदर्शन कर जल्द से जल्द ट्रांसफार्मर बदलने की मांग की। ग्रामीणों ने बताया कि ट्रांसफार्मर जलने के बाद से पांच दिनों से अंधेरा छाया हुआ है। उन्होंने 1912 पर शिकायत भी दर्ज कराई थी, लेकिन इसके बावजूद ट्रांसफार्मर नहीं बदला गया, जिससे वे परेशान हैं।

प्रदर्शन करने वालों में मुख्य रूप से राहुल प्रताप सिंह, उमेश शर्मा, नागेश्वर प्रसाद गुप्ता, लालजी, मुन्ना, सुजीत, हीरालाल पाल, मोहन और मानवेंद्र सिंह शामिल रहे। इस संबंध में सलखन फीडर के जेई अंकित पाल सिंह ने बताया कि उन्हें सूचना मिल गई है। कागजी कार्रवाई पूरी कर उच्च अधिकारियों को भेज दी गई है। उन्होंने आश्वासन दिया कि 24 घंटे के भीतर जले हुए ट्रांसफार्मर को बदलकर विद्युत आपूर्ति बहाल कर दी जाएगी।

विंध्य एक्सप्रेसवे की तैयारी तेज, मिट्टी के सैंपल लिए गए गुणवत्ता जांच के लिए आधुनिक मशीनों का उपयोग

सोनभद्र। विंध्य एक्सप्रेसवे परियोजना की तैयारियां तेज हो

गई हैं। प्रस्तावित मार्ग पर मिट्टी की गुणवत्ता और मजबूती की जांच के लिए सॉयल टेस्टिंग का कार्य शुरू कर दिया गया है। म्योरपुर ब्लॉक के रनटोला क्षेत्र में आधुनिक मशीनों की मदद से मिट्टी के नमूने एकत्र किए गए। यह एक्सप्रेसवे प्रयागराज से छत्तीसगढ़ सीमा तक लगभग 330 किलोमीटर लंबा प्रस्तावित है। इसे आगे गाजीपुर में पूर्वांचल एक्सप्रेसवे से जोड़ने की योजना है, जिससे इसकी कुल लंबाई करीब 450 किलोमीटर हो जाएगी। इससे पूर्वांचल और विंध्य क्षेत्र की सड़क संपर्क व्यवस्था को बड़ा लाभ मिलने की उम्मीद है। रविवार को म्योरपुर-बीजपुर मार्ग पर रनटोला और मुर्धवा के बीच प्रस्तावित ओवरब्रिज स्थल सहित अन्य स्थानों पर सॉयल टेस्टिंग की गई। टीम ने मशीनों से गहराई तक खुदाई कर मिट्टी के नमूने एकत्र किए हैं, जिन्हें जांच के लिए लखनऊ भेजा जाएगा। अधिकारियों के अनुसार, एक से दो माह के भीतर परीक्षण रिपोर्ट तैयार हो जाएगी। इसी रिपोर्ट के आधार पर सड़क की डिजाइन, नींव और निर्माण की तकनीकी रूपरेखा तय की जाएगी। सूत्रों के मुताबिक, मिट्टी परीक्षण और अन्य औपचारिकताएं पूरी होने के बाद परियोजना के निर्माण कार्य को आगे बढ़ाया जाएगा। शासन की मंशा है कि विधानसभा चुनाव से पहले इस परियोजना पर काम शुरू करने की दिशा में प्रक्रिया तेज की जाए।

घोरावल मार्ग पर सूखे पेड़ो का झुंड,मझिगवां गांव में राहगीरों और बस्ती को हादसे का खतरा

सोनभद्र। सोनभद्र जनपद के घोरावल ब्लॉक में घोरावल-

कोहरथा मार्ग पर स्थित मझिगवां गांव में सड़क किनारे दर्जनों सूखे पेड़ दुर्घटना का कारण बन सकते हैं। ये पेड़ सड़क की ओर झुके हुए हैं, जिससे बस्ती के निवासियों और राहगीरों को हर समय हादसे का खतरा बना रहता है।

ग्रामीणों ने इस संबंध में कई बार वन विभाग के अधिकारियों और तहसील दिवसों पर शिकायतें दर्ज कराई हैं। हालांकि, अभी तक इस समस्या का कोई समाधान नहीं हो सका है, जिससे स्थानीय लोगों में चिंता बनी हुई है।

मझिगवां निवासी राजेंद्र शर्मा, सुरेश आदिवासी, रंगू आदिवासी, रामचंद्र और चंदन सहित अन्य ग्रामीणों ने वन विभाग और जिला प्रशासन से तत्काल इन सूखे पेड़ों को कटवाकर हटाने की मांग की है। उनका कहना है कि इन पेड़ों को हटाने से किसी भी संभावित दुर्घटना को टाला जा सकेगा। इस मामले पर वन क्षेत्राधिकारी ज्ञानेश कुमार ने बताया कि सूखे पेड़ों की कटाई का कार्य वन निगम के ठेकेदारों द्वारा किया जा रहा है।

उन्होंने आश्वासन दिया कि जल्द ही इन सभी सूखे पेड़ों को कटवा दिया जाएगा।

म्योरपुर में फंसे कोयला लदे ट्रक को खींचते समय हुआ हादसा ट्रैक्टर पलटा,चालक बाल-बाल बचा

सोनभद्र। सोनभद्र के म्योरपुर ब्लॉक स्थित नवाटोला

गांव में सोमवार शाम करीब 6:30 बजे एक बड़ा हादसा टल गया। कोयला लदे ट्रक को खींचते समय एक ट्रैक्टर पलट गया, हालांकि चालक सुरक्षित बच निकला। जानकारी के अनुसार, नवाटोला गांव में एक कोयला लदा ट्रक सड़क पर फंस गया था। इसे निकालने के लिए गांव के ही एक ट्रैक्टर की मदद ली जा रही थी। ट्रक को आगे की ओर खींचते समय वह अचानक तेज गति से बढ़ा और ट्रैक्टर के पीछे लगे हल में जा फंसा। टक्कर इतनी भीषण थी कि ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर मौके पर ही पलट गया।

गनीमत रही कि ट्रैक्टर चालक ने तुरंत कूदकर अपनी जान बचा ली। इस हादसे में किसी के घायल होने की सूचना नहीं है।

घटना के बाद मौके पर बड़ी संख्या में ग्रामीण जमा हो गए।

भरौली गांव की सड़क 10 साल से खस्ता हालत, मिश्रगवां से 2KM मार्ग बदहाल

सोनभद्र। सोनभद्र जनपद के घोरावल कोहरथा मार्ग पर स्थित

भरौली गांव में मिश्रगवां से बेलन नदी ठढ़घटवा तक का लगभग 2 किलोमीटर लंबा मार्ग पिछले 10 वर्षों से जर्जर हालत में है। सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे हो गए हैं और गिट्टियां उखड़ गई हैं, जिससे आवागमन में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) द्वारा इस मार्ग का निर्माण बारह वर्ष पूर्व कराया गया था। हालांकि, पिछले दस वर्षों से यह सड़क पूरी तरह से बदहाल है। सड़क पर गिट्टियां बिखरी पड़ी हैं, जिससे राहगीरों को, विशेषकर किसानों और छात्रों को आवागमन में अत्यधिक कठिनाई होती है। भरौली गांव के निवासी सुरेंद्र त्रिपाठी, गंगा यादव, शंखलाल, सफेद लाल, छांगुर मौर्य, सूबेदार मौर्य, सरजू और अभिमन्यु यादव सहित कई ग्रामीणों ने सड़क की मरम्मत के लिए कई बार शिकायतें की हैं। उन्होंने ग्राम प्रधान, तहसील दिवस और लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को शिकायती पत्र सौंपे हैं, लेकिन पिछले दस वर्षों से उनकी शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। ग्रामीणों ने अब जिलाधिकारी से इस जर्जर सड़क की तत्काल मरम्मत कराने के लिए संबंधित विभाग को निर्देश देने की मांग की है।

नल राजा मंदिर जाने वाली सड़क जर्जर जिससे कीचड़ और गड्ढों की वजह से आवागमन मुश्किल

सोनभद्र। चतरा ब्लॉक में परसिया मोड़ से नल राजा मंदिर

तक जाने वाली मुख्य सड़क जर्जर होने से ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सड़क पर जगह-जगह गहरे गड्ढे और कीचड़ जमा होने से आवागमन प्रभावित हो गया है। बरसात के मौसम में हालात और भी खराब हो गए हैं। यह मार्ग चरकोनवा, हरदी, तियरा, गौरवा, चित्तबीसराव, केतार और परसिया समेत कई गांवों को जोड़ता है। इन गांवों के लोगों के लिए यही मुख्य संपर्क मार्ग है, जिससे प्रतिदिन बड़ी संख्या में ग्रामीण आवागमन करते हैं। ग्रामीणों का कहना है कि बारिश के दौरान पूरी सड़क कीचड़ में तब्दील हो जाती है। इससे स्कूली बच्चों, बुजुर्गों और दोपहिया वाहन चालकों को सबसे अधिक दिक्कत होती है। फिसलन और गड्ढों के कारण दुर्घटनाओं का खतरा भी लगातार बना रहता है।ग्रामीणों ने बताया कि सड़क के निर्माण और मरम्मत की मांग को लेकर कई बार प्रशासन और जनप्रतिनिधियों से शिकायत की गई, लेकिन अब तक कोई ठोस पहल नहीं हुई। उनका कहना है कि सड़क की बदहाल स्थिति से न केवल दैनिक आवागमन प्रभावित हो रहा है, बल्कि आपातकालीन सेवाओं के वाहनों को भी गांवों तक समय पर पहुंचने में कठिनाई होती है। ग्रामीणों ने प्रशासन से जल्द सड़क की मरम्मत कराकर मार्ग को आवागमन योग्य बनाने की मांग की है, ताकि लोगों को सुरक्षित और सुगम आवागमन की सुविधा मिल सके।

स्कूली बच्चों से भरी वैन सड़क से उतरी,आधा दर्जन बच्चे घायल,सोनभद्र में हादसा

सोनभद्र। सोनभद्र के म्योरपुर में सोमवार दोपहर एक

स्कूली वैन अनियंत्रित होकर सड़क से उतरकर खेत में जा घुसी। लिलासी-सागोबांध मार्ग पर हुए इस हादसे में वैन में सवार करीब एक दर्जन बच्चों में से आधा दर्जन को हल्की चोटें आईं। सभी घायल बच्चों को निजी अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया। यह घटना कुदरी गांव के पास हुई। वैन लिलासी स्थित एक इंग्लिश मीडियम स्कूल की थी और बच्चों को पूर्वी देवहार गांव ले जा रही थी। गनीमत रही कि वैन पलटी नहीं, जिससे कोई बड़ा हादसा टल गया। हादसे के बाद मौके पर ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि वाहन चालक नशे की हालत में था। सूचना मिलने पर स्कूल प्रशासन ने तुरंत घायल बच्चों का निजी अस्पताल में उपचार कराया और सभी बच्चों को सुरक्षित उनके घर पहुंचाया। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और वैन तथा चालक को चौकी ले गई। लिलासी चौकी प्रभारी परमानंद त्रिपाठी ने बताया कि बच्चों को मामूली चोटें आई हैं और वे सभी सुरक्षित हैं। प्रथम दृष्टया यह हादसा चालक को झपकी आने के कारण हुआ प्रतीत होता है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

बोर्ड में तार लगाते समय किसान को लगा बिजली का झटका,35 वर्षीय किसान की हुई मौत

सोनभद्र। जिले के बभनी थाना क्षेत्र अंतर्गत बरवाटोला ग्राम पंचायत के मैरहवा टोला

गांव में सोमवार दोपहर करीब 3 बजे करंट लगने से एक 35 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गई। घटना के बाद परिवार में मातम छा गया। जानकारी के अनुसार, मैरहवा टोला निवासी नागवंत (35 वर्ष), पुत्र सालिक, खेत से वापस लौटे थे। वे घर में बिजली का बोर्ड चालू करने गए, तभी अचानक उन्हें करंट लग गया और वे गंभीर रूप से घायल हो गए। परिवार के सदस्यों ने तुरंत नागवंत को बभनी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। वहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। हालांकि, परिजनों को विश्वास नहीं हुआ और वे उन्हें म्योरपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए, जहां डॉक्टरों ने दोबारा उनकी मौत की पुष्टि की। मृतक की पत्नी पूनम ने बताया कि नागवंत घर के बोर्ड का बटन चालू कर रहे थे, तभी यह हादसा हुआ। पूनम का रो-रोकर बुरा हाल है। मृतक के तीन बच्चे हैं, जिनमें एक 12 वर्षीय लड़की, एक 10 वर्षीय लड़का और एक 4 वर्षीय छोटी लड़की शामिल है। प्रभारी निरीक्षक अरविंद कुमार ने बताया कि शव के पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल से मेमो प्राप्त हुआ है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा रहा है और आगे की जांच व कानूनी कार्यवाही जारी है।

म्योरपुर में किसानों-शिक्षकों को मिलेट्स का प्रशिक्षण,खेती-पोषण महत्व और पैदावार बढ़ाने प्रशिक्षण

सोनभद्र। सोनभद्र के म्योरपुर विकासखंड परिसर में सोमवार को किसानों और अध्यापकों के लिए मिलेट्स पुनरुत्थान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। ब्लॉक प्रमुख मान सिंह गोंड ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और उपस्थित किसानों तथा शिक्षकों को संबोधित किया। इस प्रशिक्षण सत्र में जैविक खेती विशेषज्ञ शिव शरण सिंह ने मोटे अनाज (मिलेट्स) की खेती के तरीकों, इसके महत्व और पोषण संबंधी उपयोगिता पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने किसानों और शिक्षकों को मिलेट्स के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया। उप निदेशक कृषि राजकुमार ने मिलेट्स की खेती को बढ़ावा देने, कम पानी में बेहतर पैदावार प्राप्त करने और किसानों की आय बढ़ाने के उपायों पर चर्चा की। उन्होंने बाजरा, ज्वार, कोदो, कुटकी, रागी जैसे मोटे अनाजों के उत्पादन और उनके स्वास्थ्य लाभों के बारे में बताया। किसानों को पारंपरिक फसलों के साथ मिलेट्स को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। अध्यापकों को भी मिलेट्स के पोषण और स्वास्थ्य संबंधी महत्व से अवगत कराया गया। इसका उद्देश्य था कि वे विद्यार्थियों और अभिभावकों के बीच मोटे अनाज के प्रति जागरूकता बढ़ा सकें। वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि बदलती जलवायु परिस्थितियों में, कम पानी और कम संसाधनों में उगने वाली ये फसलें किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प साबित हो सकती हैं। इस कार्यक्रम में किसानों, अध्यापकों और संबंधित विभागीय कर्मियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस दौरान क्षेत्र में मिलेट्स उत्पादन को बढ़ावा देने और अधिक से अधिक किसानों को इससे जोड़ने पर विशेष बल दिया गया। कार्यक्रम में एडीओ कृषि दीपक, पटेल, रमेश, राहुल, रवि सिंह, नीतिका शर्मा सहित कई अन्य अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

जनपदीय तीरंदाजी प्रतियोगिता हुई पूरी,मण्डलीय प्रतियोगिता के लिए खिलाड़ियों का चयन

सोनभद्र। सोनभद्र के राबर्ट्सगंज नगर स्थित विशिष्ट स्टेडियम में जनपदीय तीरंदाजी प्रतियोगिता सोमवार शाम 05 बजे सफलतापूर्वक संपन्न हो गई। इस प्रतियोगिता में संत जेवियर्स स्कूल, राजा शारदा महेश इंटर कॉलेज, आदर्श इंटर कॉलेज और राजकीय बालिका इंटर कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। मुख्य अतिथि जिला क्रीड़ा अधिकारी शमीम अहमद ने अपने संबोधन में जनपद के छात्र-छात्राओं की तीरंदाजी प्रतिभा की सराहना की। उन्होंने कहा कि इन युवा खिलाड़ियों में भविष्य के बड़े तीरंदाज बनने की क्षमता है। इस आयोजन के मुख्य आयोजक फादर आनंद कुमार जॉन थे। प्रतियोगिता में विश्वास शर्मा, सुमंगला शर्मा, जगवंती यादव और विद्यालय के शारीरिक शिक्षक जगदंबा प्रसाद ने निर्णायक की भूमिका निभाई। व्यायाम शिक्षक जगदंबा प्रसाद ने बताया कि इस प्रतियोगिता में चयनित खिलाड़ी 8 अगस्त को होने वाली मंडलीय प्रतियोगिता में सोनभद्र का प्रतिनिधित्व करेंगे।

युवाओं में निकोटिन पाउच का बढ़ता क्रेज, ये स्मोकिंग की लत छुड़ाता है या नई लत लगाता है? जानें इसके साइड इफेक्ट

गुरुग्राम। आजकल निकोटिन पाउच युवाओं के बीच तेजी से पॉपुलर हो रहा है। सोशल मीडिया में पॉपुलर है। आसानी से छिपा सकते हैं। इससे बदबू नहीं आती। इस्तेमाल

सिगरेट और दूसरे तंबाकू प्रोडक्ट्स से अलग, निकोटिन लेने के इस तरीके ने लोगों का ध्यान खींचा है। यह छोटे-से सफेद पाउच में आता है, जिसे होंठ और मसूड़ों के बीच रखकर यूज किया जाता है। इसमें न धुआं निकलता है, न स्मेल आती है। यही वजह है कि कई लोग इसे सिगरेट का सेफ ऑप्शन मानने लगे हैं। हालांकि, इसमें मौजूद निकोटिन की लत लग सकती है। इसके अलावा हार्ट, ब्लड प्रेशर और मेंटल हेल्थ पर इसका नकारात्मक असर पड़ सकता है। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' (डब्लूएचओ) ने हाल ही में निकोटिन पाउच की बढ़ती बिक्री और युवाओं में इसके बढ़ते इस्तेमाल पर चिंता जताई है। डब्लूएचओ का कहना है कि निकोटिन पाउच के 'टोबैको-फ्री' और 'क्लीन' जैसे दावे युवाओं को आकर्षित कर रहे हैं। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में निकोटिन पाउच के बारे में बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- निकोटिन पाउच कैसे काम करता है? क्या यह स्मोकिंग छुड़ाने में मदद करता है? इसके हेल्थ रिस्क क्या हैं? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट: डॉ. उत्कर्ष भगत, सीनियर कंसल्टेंट, डायरेक्टर, न्यूरोलॉजी, नारायणा हॉस्पिटल, गुरुग्राम जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- निकोटिन पाउच क्या है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- निकोटिन पाउच एक छोटा सफेद पाउच होता है। आमतौर पर इसमें तंबाकू की पत्तियां नहीं होतीं। इसमें निकोटिन, फ्लेवर, स्वीटनर और प्लांट बेस्ड फाइबर जैसे पदार्थ होते हैं। इसे होंठ और मसूड़ों के बीच रखा जाता है, जहां से निकोटिन मुंह की अंदरूनी स्किन के जरिए ब्लड में पहुंच जाता है। इसमें धुआं नहीं निकलता। इसलिए कई लोग इसे सिगरेट के विकल्प के रूप में इस्तेमाल करते हैं। सवाल- यह कैसे काम करता है? जवाब- पॉइंटर्स से समझिए- निकोटिन पाउच मुंह की अंदरूनी स्किन (म्यूकोसा) के जरिए सीधे ब्लड में पहुंचता है। यह ब्लड के जरिए ब्रेन तक पहुंचता है और डोपामाइन (फील-गुड केमिकल) का लेवल बढ़ा देता है।इससे कुछ समय के लिए खुशी, सुकून या एनर्जी का एहसास होता है। जब यह असर खत्म होने लगता है, तो दोबारा इसे लेने की इच्छा होती है। बार-बार इसे लेने से निकोटिन की लत लग सकती है। सवाल- निकोटिन पाउच में कौन-से ऑर्गेनिक और केमिकल कंपाउंड्स होते हैं? जवाब- इसमें कई तरह के ऑर्गेनिक और केमिकल कंपाउंड्स होते हैं, जो अलग-अलग काम करते हैं। निकोटिन- नर्वस सिस्टम को प्रभावित करता है और लत का मुख्य कारण है। सेल्यूलोज (प्लांट फाइबर)- पाउच को टेक्सचर और साइज देता है। फ्लेवरिंग एजेंट्स- स्वाद और खुशबू बढ़ाते हैं। स्वीटनर- कड़वाहट कम करते हैं। पीएच रेगुलेटर (सोडियम कार्बोनेट/सोडियम बाइकार्बोनेट)- निकोटिन को मुंह की अंदरूनी स्किन से तेजी से अवशोषित होने में मदद करते हैं। ह्यूमेक्टेंट और स्टेबलाइजर- नमी बनाए रखते हैं और प्रोडक्ट की क्वालिटी को स्थिर रखते हैं। सवाल- युवा इसकी ओर क्यों आकर्षित हो रहे हैं? जवाब- कंपनियां निकोटिन पाउच को अक्सर 'स्मोक-फ्री' और 'कूल लाइफस्टाइल' का हिस्सा बताकर प्रमोट करती हैं। अलग-अलग फ्लेवर, आसानी से जेब में रखने और बिना थुएं के इस्तेमाल होने जैसी बातें भी युवाओं को इसकी ओर आकर्षित करती हैं। धुआं नहीं निकलता। जेब में रख सकते हैं। गलतफहमी कि ये सेफ है। करना आसान है। फ्लेवर का आकर्षण है। सवाल- निकोटिन पाउच में निकोटिन की मात्रा कितनी होती है? जवाब- यह अलग-अलग ब्रांड और प्रोडक्ट के अनुसार बदलती है। आमतौर पर एक पाउच में 2-20 मिलीग्राम तक निकोटिन हो सकता है।ज्यादातर प्रोडक्ट 3, 4, 6 या 8 मिलीग्राम वाले होते हैं। कुछ हाई-स्ट्रेंथ पाउच में 10, 12, 15 या 20 मिलीग्राम तक निकोटिन होता है। सवाल- क्या युवा सिगरेट छोड़ने के लिए निकोटिन पाउच ले रहे हैं? जवाब- हां, उन्हें लगता है कि धुआं और तंबाकू न होने की वजह से यह सेफ ऑप्शन है, जबकि यह सेफ नहीं है। इसे बिना डॉक्टर की सलाह

के इस्तेमाल करने से एक लत को छोड़ने के चक्कर में दूसरी लत लग सकती है। सवाल- क्या यह नुकसानदायक है? जवाब- हां, इसमें मौजूद निकोटिन शरीर पर नेगेटिव असर डालता है और इसकी लत लग सकती है। सवाल- निकोटिन पाउच के हेल्थ रिस्क क्या हैं? जवाब- निकोटिन पाउच का इस्तेमाल करने से शॉर्ट और लॉन्ग टर्म में कई तरह के हेल्थ रिस्क हो सकते हैं। शॉर्ट टर्म:-चक्कर, मतली-उल्टी, हिचकी, मुंह में जलन, मसूड़ों में दर्द, हार्ट बीट बढ़ना। लॉन्ग टर्म:-निकोटिन की लत, हाई ब्लड प्रेशर,हार्ट डिजीज, दांतों की समस्या, नींद खराब होना, स्ट्रेस, मूड स्विंग्स। सवाल- क्या निकोटिन पाउच से कैंसर का रिस्क बढ़ता है? जवाब- मौजूदा साइंटिफिक एविडेंस के मुताबिक, निकोटिन खुद कैंसर पैदा करने वाला (कार्सिनोजेन) पदार्थ नहीं माना जाता। हालांकि, यह शरीर की कुछ सेल्स के काम करने के तरीके को प्रभावित कर सकता है। निकोटिन पाउच से कैंसर के रिस्क को लेकर अभी रिसर्च की जा रही है। सवाल- अगर कोई गलती से निकोटिन

पाउच निगल ले तो क्या होता है? जवाब- गलती से निगलने पर निकोटिन पॉइजनिंग हो सकती है। ऐसे में कुछ लक्षण दिखाई देते हैं। क्या निकोटिन पाउच की भी लत लग सकती है? जवाब- हां, इसमें मौजूद निकोटिन एक 'हाई एडिक्शन सब्सटेंस' है। इसे बार-बार इस्तेमाल करने पर शरीर और ब्रेन को इसकी आदत हो जाती है, जो समय के साथ 'निकोटिन डिपेंडेंसी' में बदल सकती है। निकोटिन पाउच की लत को हल्के में न लें। बार-बार इस्तेमाल करने से निर्भरता बढ़ती जाती है। इसे छोड़ने के दौरान चिड़चिड़ापन या बेचैनी महसूस हो सकती है, लेकिन सही सलाह और लगातार प्रयास से इससे बाहर निकला जा सकता है। निकोटिन पाउच न मिलने पर- सिर में दर्द होना। फोकस न कर पाना। 'घबराहट, बेचैनी होना। चाहकर भी न छोड़ पाना। पाउच की मात्रा बढ़ना। नींद आने में दिक्कत। सवाल- किन लोगों को निकोटिन पाउच बिल्कुल यूज नहीं करना चाहिए? जवाब- इन लोगों को निकोटिन पाउच का इस्तेमाल बिल्कुल नहीं करना चाहिए- जिन्हें निकोटिन एलर्जी है। जिनका बीपी हाई रहता है। जिन्हें हार्ट डिजीज है। 18 साल से कम उम्र के बच्चे और किशोर। गर्भवती महिलाएं। ब्रेस्टफीड कराने वाली महिलाएं। सवाल- निकोटिन पाउच की लत छोड़ने के लिए क्या करें? जवाब- निकोटिन की लत छोड़ना मुश्किल हो सकता है, लेकिन सही प्लानिंग और थेरेपिस्ट की मदद से इसे छोड़ा जा सकता है। इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखें- सबसे पहले डॉक्टर से सलाह लें। एक क्विट डेट (छोड़ने की तारीख) तय करें और उसी के अनुसार योजना बनाएं। डॉक्टर की सलाह के अनुसार धीरे-धीरे निकोटिन की मात्रा कम करें। जरूरत पड़ने पर सर्टिफाइड निकोटिन रिप्लेसमेंट थेरेपी (जैसे निकोटिन गम, पैच और लोजेंज) या अन्य दवाएं लें। उन स्थितियों और आदतों (ट्रिगर्स) को पहचानें, जिनकी वजह से निकोटिन लेने की इच्छा होती है। उनसे बचने की कोशिश करें। परिवार और दोस्तों का सहयोग लें, ताकि मुश्किल समय में हौसला मिले। अपने रूटीन में रेगुलर एक्सरसाइज, पर्याप्त नींद और स्ट्रेस कम करने वाली एक्टिविटीज शामिल करें। अगर दोबारा निकोटिन लेने का मन करे या गलती से इस्तेमाल हो जाए, तो निराश न हों। फिर से छोड़ने की कोशिश करें। निकोटिन पाउच से जुड़े कॉमन सवाल-जवाब- सवाल- क्या निकोटिन पाउच में तंबाकू होता है? जवाब- ज्यादातर निकोटिन पाउच में तंबाकू की पत्तियां नहीं होतीं। हालांकि, बाजार में कुछ ऐसे ओरल निकोटिन प्रोडक्ट भी मिलते हैं, जिनमें तंबाकू होता है। सवाल- एक निकोटिन पाउच को कितनी देर तक मुंह में रखा जाता है?जवाब- आमतौर पर एक निकोटिन पाउच को 20-60 मिनट तक होंठ और मसूड़ों के बीच रखा जाता है। यह समय अलग-अलग ब्रांड और उसमें मौजूद निकोटिन की मात्रा के अनुसार बदल सकता हैं। सवाल- क्या निकोटिन पाउच से दांत खराब हो सकते हैं? जवाब- हां, इससे दांतों के आसपास के टिश्यू को नुकसान हो सकता है।अगर ओरल हाइजीन का ध्यान न रखा जाए, तो दांतों और मसूड़ों से जुड़ी समस्याओं का रिस्क बढ़ सकता है। सवाल- क्या निकोटिन पाउच खेलने या जिम करने वालों के लिए सेफ है? जवाब- नहीं, निकोटिन कुछ समय के लिए अलर्टनेस बढ़ा सकता है, लेकिन यह हार्ट बीट और ब्लड प्रेशर भी बढ़ाता है। इससे एक्सरसाइज के दौरान शरीर पर एक्स्ट्रा प्रेशर पड़ता है। सवाल- क्या निकोटिन पाउच का इस्तेमाल करने के बाद गाड़ी चलाना सेफ है? जवाब- अगर निकोटिन पाउच लेने के बाद चक्कर, मतली, बेचैनी, सिर हल्का लगना या फोकस करने में दिक्कत महसूस हो रही हो, तो गाड़ी नहीं चलानी चाहिए।

इंग्लिश टीम में ड्रिंकिंग कल्चर नहीं:क्रिकेट और शराब का रिश्ता पुराना-बेन स्टोक्स, बीबीएल के सबसे महंगे विदेशी प्लेयर बन सकते हैं

स्पोर्ट्स डेस्क। इंग्लैंड के पूर्व टेस्ट कप्तान बेन स्टोक्स ने

इंग्लिश टीम में ड्रिंकिंग कल्चर की धारणा खारिज की। उन्होंने कहा कि टीम में शराब की समस्या बताना गलत है। 35 साल के स्टोक्स ने स्टुअर्ट ब्रॉड और जोस बटलर के पॉडकास्ट 'फॉर द लव ऑफ क्रिकेट' में इस मुद्दे पर बात की। उन्होंने कहा- 'इंग्लैंड की सीनियर टीम में कोई ड्रिंकिंग कल्चर नहीं है, लेकिन यह सच है कि यूके में क्रिकेट का शराब से गहरा नाता है।' स्टोक्स ने न्यूजीलैंड के खिलाफ ट्रेंट ब्रिज टेस्ट के बीच में ही इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी थी। एशेज के दौरान चर्चा में आया शराब का मुद्दा-इंग्लैंड क्रिकेट में शराब का मुद्दा एशेज सीरीज के दौरान चर्चा में आया था, जब कई प्लेयर्स के शराब पीने की खबरें सामने आई थीं। मामला तब और बढ़ गया, जब ओपनिंग बल्लेबाज बेन डकेट टीम के मिड-सीरीज ब्रेक के दौरान नूसा में नशे की हालत में दिखे थे। स्टोक्स न्यूजीलैंड के खिलाफ लॉर्ड्स टेस्ट में जीत के बाद तेज गेंदबाज गस एटकिंसन के साथ ड्रिंक्स के लिए बाहर गए थे। वहां एक नाइटक्लब में उनकी एक

एकेडमी रग्बी खिलाड़ी के साथ घटना हुई थी, जिसके चलते उन्हें दूसरे टेस्ट से बाहर कर दिया गया था। इंग्लैंड का कोच बनना चाहते हैं स्टोक्स-स्टोक्स ने बताया कि वह अभी लेवल-3 कोचिंग क्वालिफिकेशन पूरा कर रहे हैं। उन्होंने कहा, मैं चाहता हूं कि जब खेलना छोड़ूं तो कोचिंग की सारी तैयारियां पूरी हों। मैं क्रिकेट से जुड़ा रहना चाहता हूं। स्टोक्स ने 122 टेस्ट, 114 वनडे और 43 टी-20 मैचों में इंग्लैंड को रिप्रेजेंट किया। उनकी कप्तानी में इंग्लैंड ने अटैकिंग बैजबॉल क्रिकेट खेली। जो रूट की कप्तानी को लेकर चिंता-स्टोक्स ने नए टेस्ट कप्तान जो रूट को लेकर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि रूट हमेशा टीम को खुद से पहले रखते हैं और यही बात उन्हें परेशान करती है। स्टोक्स ने कहा, मैंने जो से कहा कि मेरी एकमात्र चिंता आप हैं। पिछली बार कप्तान रहते हुए मैंने देखा था कि वह खुद पर कितना दबाव लेते थे। मैं नहीं चाहता कि वह दोबारा उसी दौर से गुजरें। हैरी ब्रूक को मौका नहीं मिलने पर हैरान-पूर्व कप्तान ने यह भी कहा कि उन्हें उम्मीद थी कि उनके बाद हैरी ब्रूक को टेस्ट टीम की कमान मिलेगी। ब्रूक टीम के उप-कप्तान थे, इसलिए चयनकर्ताओं के फैसले ने उन्हें चौंकाया। उन्होंने कहा, अगर आपको लगता है कि कोई खिलाड़ी अच्छा कप्तान बन सकता है तो उसे मौका देना चाहिए। मुझे समझ नहीं आया कि ब्रूक को कप्तान न बनाकर क्या संदेश दिया गया। 2027 एशेज को देखते हुए लिया संन्यास-स्टोक्स ने बताया कि संन्यास का फैसला उन्होंने काफी सोच-विचार के बाद लिया था। वह यह आकलन कर रहे थे कि क्या 2027 की एशेज सीरीज तक बेस्ट परफॉर्मेंस दे पाना संभव होगा। आखिरकार उन्होंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट छोड़ने का फैसला किया और कहा कि वह इस निर्णय को बदलने वाले नहीं हैं। बीबीएल के सबसे महंगे विदेशी खिलाड़ी बन सकते हैं- संन्यास के बाद भी स्टोक्स क्रिकेट से दूर नहीं होंगे। रिपोर्ट्स के मुताबिक, कई बिग बैश फ्रेंचाइजी उन्हें अपनी टीम में शामिल करना चाहती हैं। सिडनी सिक्सर्स इस दौड़ में सबसे आगे मानी जा रही है। ऑस्ट्रेलियाई मीडिया के अनुसार

स्टोक्स को लगभग 6 लाख ऑस्ट्रेलियाई डॉलर (करीब 3.4 करोड़ रुपए) का कॉन्ट्रैक्ट मिल सकता है। ऐसा हुआ तो वह बीबीएल इतिहास के सबसे महंगे विदेशी खिलाड़ी बन जाएंगे। मैथ्यू मॉट से फिर हो सकती है जोड़ी- सिडनी सिक्सर्स के पास इंग्लैंड के पूर्व व्हाइट-बॉल कोच मैथ्यू मॉट हैं। मॉट और स्टोक्स की जोड़ी ने 2022 टी-20 वर्ल्ड कप में इंग्लैंड को चैंपियन बनाया था। स्टोक्स ने 122 टेस्ट, 114 वनडे मैच खेले-डरहम के लिए खेलने वाले स्टोक्स का वनडे डेब्यू 2011 में हुआ था। वहीं टेस्ट डेब्यू 2013-14 की एशेज सीरीज में हुआ। वे अप्रैल 2022 से इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान रहे हैं। स्टोक्स ने इंग्लैंड के लिए कुल 122 टेस्ट खेले। इनमें 44 मैचों में उन्होंने कप्तानी की। उन्होंने टेस्ट

करियार में 14 शतक और 37 अर्धशतकों की मदद से 7 हजार से अधिक रन बनाए। इसके अलावा उन्होंने 252 विकेट भी लिए। उन्होंने 114 वनडे इंटरनेशनल 5 शतक और 24 अर्धशतकों की मदद से 3463 रन बनाए। उन्होंने 74 विकेट भी झटके। वहीं स्टोक्स 43 टी-20 इंटरनेशनल मैच का हिस्सा रहे। उन्होंने 585 रन बनाए और 26 विकेट झटके। बेन स्टोक्स की यादगार पारियां-1. 2019 वर्ल्ड कप फाइनल, स्टोक्स की 84 रन की पारी-14 जुलाई 2019, लॉर्ड्स का मैदान। वनडे वर्ल्ड के फाइनल में न्यूजीलैंड ने 242 रन का टारगेट दिया। जवाब में इंग्लैंड ने 49 ओवर में 227 रन पर 8 विकेट गंवा दिए थे। आखिरी ओवर में 15 रन की दरकार थी। तब स्टोक्स 70 रन बनाकर खेल रहे थे। उन्होंने ट्रेंट बोल्ट की तीसरी और चौथी गेंद पर छक्का जड़ दिया। आखिरी दो गेंद पर रनआउट से मैच सुपर ओवर में गया। सुपर ओवर भी टाई हो गया। आखिरकार बाउंड्री काउंट के नियम पर इंग्लैंड चैंपियन बना। 2. हेडिंग्ले 2019, अकेले दम पर एशेज मैच जीताया- वर्ल्ड कप जीत के 6 हफ्ते बाद हेडिंग्ले में एशेज का तीसरा टेस्ट हुआ। इंग्लैंड को चौथी पारी में 359 रन का टारगेट मिला। टीम ने 286 रन पर 9 विकेट गंवा दिए। यहां से बेन स्टोक्स ने 10वें विकेट के लिए 76 रन की साझेदारी कर टीम को जीत दिला दी। कमाल की बात है कि इस साझेदारी में बेन स्टोक्स ने अकेले 74 रन बनाए। उन्होंने 135 रन की पारी खेली। स्टोक्स से जुड़े दो बड़े विवाद-1. 2017, ब्रिस्टल नाइटक्लब में मारपीट का आरोप लगा-स्टोक्स सितंबर 2017 में वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे मैच के बाद ब्रिस्टल के एक नाइटक्लब में गए। वे नाइट क्लब के बाहर देर रात एक स्ट्रीट फाइट में उलझ गए। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार किया और उन पर मारपीट का आरोप लगा। इसके बाद इंग्लैंड टीम से उनकी वाइस-कैप्टेंसी छिन ली गई और 2017-18 की एशेज सीरीज से बाहर कर दिया गया। 2018 में कोर्ट ट्रायल में स्टोक्स बरी हो गए। हालांकि लेकिन ईसीबी ने उन्हें खेल को बदनाम करने का दोषी पाते हुए जुर्माना और सस्पेंशन दिया। 2. 2026, चेल्सी नाइटक्लब विवाद, दूसरे टेस्ट से बाहर हुए स्टोक्स-न्यूजीलैंड के खिलाफ चल रही टेस्ट सीरीज में स्टोक्स का नाम एक और नाइटक्लब विवाद से जुड़ा। लॉर्ड्स में पहला टेस्ट जीतने के बाद स्टोक्स और गस एटकिंसन चेल्सी के एक नाइटक्लब गए। दोनों ने टीम का मिडनाइट कर्फ्यू तोड़ा। वहां एक खिलाड़ी से जुड़ा विवाद हुआ, जिसमें सिक्योरिटी स्टाफ को चोट लगी।ईसीबी ने जांच के बाद स्टोक्स और एटकिंसन को दूसरे टेस्ट से बाहर कर दिया। जांच में स्टोक्स को क्लीन चिट मिली, लेकिन कर्फ्यू तोड़ने पर लिखित चेतावनी दी गई। इसके बाद इस मैच में स्टोक्स ने वापसी की थी।

अरशद नदीम के कोच बोले- पर्याप्त तैयारी नहीं हुई,पाकिस्तानी स्पोर्ट्स फेडरेशन ने दूरी बना ली थी

इस्लामाबाद। पाकिस्तानी जेवलिन थ्रोअर अरशद नदीम के कोच ने कहा है कि हमारी तैयारी पर्याप्त नहीं थी। रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि गेम्स से पहले पाकिस्तान एमेच्योर एथलेटिक्स फेडरेशन (पीएएएफ) ने उनकी तैयारी से दूरी बना ली थी। इसके चलते नदीम को अधिकांश तैयारी अपने स्तर पर करनी पड़ी। ओलिंपिक चैंपियन नदीम ग्लासगो कॉमनवेल्थ गेम्स में अपने करियर के सबसे खराब प्रदर्शनों में से एक से गुजरे। वह 80 मीटर का आंकड़ा भी पार नहीं कर सके और नौवें स्थान पर रहे। श्रीलंका के रुमेश पाथिरागे ने गोल्ड जीता। भारत के नीरज चोपड़ा और यशवीर सिंह ने सिल्वर और ब्रॉन्ज मेडल हासिल किए। कोचिंग विवाद के बाद कम हुआ समर्थन-पीटीआई के मुताबिक पिछले साल नदीम के कोचिंग सेटअप को लेकर मतभेद सामने आने के बाद फेडरेशन ने उनके कार्यक्रम को पूरा समर्थन नहीं दिया। रिपोर्ट में कहा गया कि नदीम की ट्रेनिंग से जुड़े कई अनुरोधों पर ध्यान नहीं दिया गया। साथ ही पाकिस्तान स्पोर्ट्स बोर्ड ने विदेशी कोच और ट्रेनर उपलब्ध कराने के लिए भी फंड जारी नहीं किया। नदीम ने ओलिंपिक गोल्ड से पहले साउथ अफ्रीकी कोच टेर्सियस लीबेनबर्ग के मार्गदर्शन में ट्रेनिंग की थी, लेकिन इस बार वह विदेश में तैयारी करने के बजाय लाहौर में अपने पुराने कोच सलमान बट और स्थानीय ट्रेनर्स के साथ अभ्यास करते रहे। भारत की तैयारी से हुई तुलना-रिपोर्ट में भारत और पाकिस्तान की तैयारियों की तुलना भी की गई है।

नीरज 21 अगस्त को लुसाने डायमंड लीग में उतरेंगे,ओलिंपिक गोल्डिस्ट अरशद और श्रीलंका के पथिराजे से मुकाबला,कॉमनवेल्थ गेम्स में सिल्वर जीता था

स्पोर्ट डेस्क। दो बार के ओलिंपिक मेडलिस्ट नीरज चोपड़ा 21 अगस्त को स्विट्जरलैंड में

होने वाली लुसाने डायमंड लीग में हिस्सा लेंगे। कमर की चोट से वापसी कर रहे नीरज के लिए यह सीजन का तीसरा इवेंट होगा। नीरज के सामने इस बार कॉमनवेल्थ गेम्स गोल्ड मेडलिस्ट रुमेश पथिराजे, पाकिस्तान के ओलिंपिक चैंपियन अरशद नदीम होंगे। ग्लासगो में नीरज ने 85.83 मीटर का सीजन बेस्ट थ्रो फेंककर सिल्वर मेडल जीता था। नीरज पिछले साल सितंबर के बाद पहली बार जून में दोहा डायमंड लीग में उतरे थे। वहां उन्होंने 85.69 मीटर का थ्रो कर चौथा स्थान हासिल किया। इसके बाद कॉमनवेल्थ गेम्स में 85.83 मीटर का थ्रो फेंककर सिल्वर जीता। मेडल जीतने के बाद नीरज ने कहा था कि उनकी वापसी सही दिशा में जा रही है और आने वाली प्रतियोगिताओं में प्रदर्शन और बेहतर करने की कोशिश रहेगी। लुसाने में नीरज का बेस्ट थ्रो-लुसाने नीरज के पसंदीदा मैदानों में से एक रहा है। उन्होंने 2022 में यहां 89.08 मीटर के थ्रो के साथ डायमंड लीग का खिताब जीता था। वहीं 2024 में 89.49 मीटर का थ्रो फेंककर दूसरे स्थान पर रहे थे। ऐसे में भारतीय स्टार एक बार फिर इसी ट्रैक पर पदक की उम्मीद लेकर उतरेंगे। पथिराजे सबसे बड़े दावेदार-श्रीलंका के रुमेश पथिराजे फॉर्म में चल रहे जेवलिन थ्रोअर हैं। उन्होंने कॉमनवेल्थ गेम्स में 89.75 मीटर के थ्रो के साथ गोल्ड जीता था। उनका व्यक्तिगत बेस्ट प्रदर्शन 92.62 मीटर है, जो उन्होंने इसी साल रोम के गोल्डन गाला में बनाया था। इस सीजन में 90 मीटर का आंकड़ा पार करने वाले वह इकलौते खिलाड़ी हैं।

अरशद और रोहलर भी उतरेंगे-लुसाने डायमंड लीग में नीरज और पथिराजे के अलावा पाकिस्तान के अरशद नदीम, त्रिनिदाद एवं टोबैगो के केशव वालकॉट, ग्रेनाडा के एंडरसन पीटर्स और जर्मनी के थॉमस रोहलर भी उतरेंगे।

इनके अलावा चेक रिपब्लिक के जैकब वाडलेच, जर्मनी के जूलियन वेबर, स्विट्जरलैंड के साइमन वीलैंड और अमेरिका के कर्टिस थॉम्पसन भी फील्ड में होंगे।

कॉमनवेल्थ से लौटे भारतीय खिलाड़ियों का स्वागत,अस्मिता बोलीं- जूडो को नई पहचान मिलेगी, साक्षी ने कहा- सपने का सच होने जैसा

नयी दिल्ली। स्कॉटलैंड के ग्लासगो में आयोजित कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 में शानदार प्रदर्शन के बाद भारतीय खिलाड़ियों का सोमवार को दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल (आईजीआई)

एयरपोर्ट पर स्वागत किया गया। बॉक्सिंग, जूडो और पैरा स्पोर्ट्स के मेडल विजेताओं के स्वागत के लिए स्पोर्ट्स ऑथोरिटी ऑफ इंडिया, भारतीय ओलिंपिक संघ और संबंधित राष्ट्रीय खेल महासंघों के अधिकारी, कोच, परिवार के सदस्य और बड़ी संख्या में प्रशंसक मौजूद रहे। ढोल-नगाड़ों, फूल-मालाओं और तिरंगे के साथ खिलाड़ियों का अभिनंदन किया गया। खिलाड़ियों ने इस सफलता का श्रेय टीमवर्क और तैयारी को दिया तथा कहा कि अब उनका अगला लक्ष्य एशियन गेम्स में भी भारत के लिए अधिक से अधिक पदक जीतना है। खिलाड़ियों ने क्या कहा- बॉक्सिंग-भारत का सबसे सफल खेल बॉक्सिंग रहा। 14 मुक्केबाजों के दल में से 10 खिलाड़ी मेडल जीतकर लौटे। इसमें 7 गोल्ड और 3 सिल्वर शामिल रहे। यानी 71फीसदी मेडल कन्वर्जन रेट। बर्मिंघम 2022 में यह आंकड़ा 58फीसदी था। महिला 51 किग्रा वेट कैटेगरी की गोल्ड मेडलिस्ट साक्षी चौधरी ने कहा, 'यह किसी सपने के सच होने जैसा है। आप सभी हमारा स्वागत करने आए, इससे बहुत अच्छा लग रहा है। बॉक्सिंग में भारत का यह अब तक का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन है। अब हमारा अगला लक्ष्य एशियन गेम्स हैं और हम उसकी तैयारी में जुटेंगे।' प्रिया घनघस (बॉक्सिंग, गोल्ड)- प्रिया ने कहा, 'यह मेरे करियर का अब तक का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन है। देश के लिए गोल्ड जीतकर बहुत खुशी हो रही है। अब मेरा पूरा फोकस एशियन गेम्स में भी भारत के लिए गोल्ड जीतने पर रहेगा।' जैस्मिन लंबोरिया (बॉक्सिंग, गोल्ड) जैस्मिन ने कहा, 'मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। मेरा परिवार और कोच यहां आए हैं। अब मेरा लक्ष्य आने वाली प्रतियोगिताओं में भी भारत के लिए और मेडल जीतना है।' नरेंद्र बेरवाल (बॉक्सिंग, सिल्वर) हेवीवेट बॉक्सर नरेंद्र बेरवाल ने कहा, 'पूरी टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया। यह मेरा पहला कॉमनवेल्थ गेम्स था। मैंने पूरी तैयारी की थी, लेकिन गोल्ड नहीं जीत सका और सिल्वर से संतोष करना पड़ा। अब दो महीने बाद एशियन गेम्स हैं और वहां अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश करूंगा।' जूडो-जूडो में भारत ने पहली बार कॉमनवेल्थ इतिहास में गोल्ड जीता। अस्मिता डे ने गोल्ड दिलाया। इसके कुछ मिनट बाद हर्ष सिंह ने दूसरा गोल्ड जीत लिया। यामिनी मौर्य ने सिल्वर और उन्नति शर्मा ने ब्रॉन्ज जीतकर कुल चार मेडल दिलाए। हालांकि 14 सदस्यीय भारतीय टीम के दो खिलाड़ी अरुण कुमार और तुलिका मान डोपिंग के कारण बाहर हो गए। अस्मिता डे ने कहा, 'भारत ने पहली बार जूडो में दो गोल्ड, एक सिल्वर और एक ब्रॉन्ज मेडल जीता है। यह हमारे लिए बड़ी उपलब्धि है। उम्मीद है कि इससे देश में जूडो को नई पहचान मिलेगी और ज्यादा बच्चे इस खेल से जुड़ेंगे।' सोमन राणा ने कहा, 'यह मेडल सिर्फ मेरा नहीं, बल्कि पूरे देश, आर्मी और मेरे राज्य का है। मुझे खुशी है कि अब पैरा स्पोर्ट्स को पहले की तुलना में ज्यादा पहचान मिल रही है। अब मेरा लक्ष्य एशियन गेम्स और पैरालंपिक में भी अच्छा प्रदर्शन करना है।'मोहम्मद बासिल ने कहा, 'यह मेरी पहली अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता थी और सिल्वर मेडल जीतकर बेहद खुशी हो रही है। मौसम थोड़ा चुनौतीपूर्ण था, लेकिन इससे काफी सीख मिली। अब अगली प्रतियोगिताओं में और बेहतर प्रदर्शन करने की कोशिश करूंगा।'

उपचुनावों के परिणाम भाजपा को सोचने पर मजबूर करेंगे

बिहार के बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव के नतीजों ने कुछ को चौंकाया है, तो कुछ को सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। आमतौर पर उपचुनावों में मतदाता सत्तारूढ़ दल या गठबंधन के पक्ष में मतदान करते रहे हैं। इस तर्क के आधार पर बांकीपुर में भाजपा ही मतदाताओं की पहली पसंद होनी चाहिए थी, लेकिन परिणाम इसके विपरीत रहे। ऐसा नहीं है कि सत्तारूढ़ दल के उम्मीदवार कभी उपचुनाव

हारते नहीं हैं; लेकिन भाजपा के लिए सबसे अधिक चिंता का विषय घटा हुआ वोट-शेयर होना चाहिए। इस विधानसभा क्षेत्र से पार्टी ने लगातार नौ चुनाव जीते थे और प्रत्येक चुनाव में उसे 60 प्रतिशत से अधिक मत मिले थे, जबकि हालिया उपचुनाव में उसका मत-प्रतिशत घट गया है। यह नवगठित जन सुराज पार्टी (जेएसपी) से भी अधिक प्रशांत किशोर की जीत मानी जाएगी, क्योंकि 2025 के बिहार चुनाव में जेएसपी अपना प्रभाव छोड़ने में विफल रही थी। तब पार्टी सभी सीटों पर हार गई थी और उसे केवल 3.5 प्रतिशत मत मिले थे। भले ही गुजरात की मंजलपुर सीट पर भाजपा भारी वोट-शेयर हासिल कर अपनी जीत का जश्न मना सकती है, लेकिन मध्य प्रदेश की दतिया सीट पर उसे एक और झटका लगा, जहां कांग्रेस उम्मीदवार घनश्याम सिंह ने भाजपा के आशुतोष तिवारी को पराजित किया। वैसे दतिया की सीट पहले भी कांग्रेस के पास थी और चुनाव में कांग्रेस केवल अपनी सीट बचाने में सफल रही है। लेकिन बांकीपुर भाजपा का मजबूत गढ़ रहा है। 1995 के बाद से पार्टी इस सीट पर कभी पराजित नहीं हुई थी। पिछले पांच वर्षों के उपचुनावों के आंकड़े बताते हैं कि इस अवधि में सत्तारूढ़ दलों/गठबंधनों की सफलता दर 78 प्रतिशत रही, जबकि विपक्ष कुछ ही उपचुनाव जीत सका और उसकी सफलता दर 22 प्रतिशत रही। यह भी उल्लेखनीय है कि इन तीन उपचुनावों से पहले इसी साल सात और सीटों पर उपचुनाव हुए थे और सभी सीटें सत्तारूढ़ दलों/गठबंधनों ने जीती थीं। इनमें पांच भाजपा/एनडीए और दो कर्नाटक में कांग्रेस के खाते में गई थीं।2025 में 15 सीटों पर उपचुनाव हुए, जिनमें सत्तारूढ़ दलों/गठबंधनों ने नौ पर जीत दर्ज की, जबकि विपक्षी उम्मीदवार छह सीटों पर विजयी रहे। 2024 में 86 सीटों पर उपचुनाव हुए थे। इनमें से 69 पर सत्तारूढ़ दलों/गठबंधनों ने जीत हासिल की, जबकि विपक्षी उम्मीदवार 17 सीटें जीत सके थे। इसकी एक स्वाभाविक वजह यह मानी जाती है कि मतदाता ऐसे उम्मीदवार को चुनना चाहते हैं, जो उनके काम आसानी से करा सके और सत्तारूढ़ दल का उम्मीदवार उन्हें इसके लिए उपयुक्त विकल्प लगता है। लेकिन भाजपा के लिए बांकीपुर की हार कई सवाल खड़े करती है। इस सीट का पहली बार वर्ष 1995 में प्रतिनिधित्व वर्तमान भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन के पिता नवीन किशोर प्रसाद सिन्हा ने किया था। उन्होंने जनता दल के रामानंद यादव को तीन प्रतिशत से भी कम मतों के अंतर से हराकर यह सीट जीती थी। इसके बाद से भाजपा ने इस सीट पर लगातार अपना कब्जा बनाए रखा। 1995 से 2006 तक इस सीट का प्रतिनिधित्व नवीन किशोर प्रसाद सिन्हा ने ही किया। उनके निधन के बाद हुए 2006 के उपचुनाव में नितिन नवीन यहां से चुने गए। नितिन नवीन ने इस विधानसभा क्षेत्र से लगातार पांच चुनाव जीते हैं। 2006 के उपचुनाव में उन्हें रिकॉर्ड 82 प्रतिशत मत मिले थे। उसके बाद भी उन्होंने लगभग हर चुनाव में 60 प्रतिशत से अधिक मत हासिल किए। केवल वर्ष 2020 इसका अपवाद रहा, जब उन्हें 59.05 प्रतिशत मत प्राप्त हुए। यह स्पष्ट नहीं है कि बिहार में डबल इंजन की सरकार होने के बावजूद बांकीपुर में भाजपा का समर्थन-आधार 28 प्रतिशत से अधिक कैसे घट गया? क्या बांकीपुर में उम्मीदवार बदलने और दतिया में पार्टी के वरिष्ठ नेता नरोत्तम मिश्रा को टिकट नहीं देने के फैसले में भाजपा से कोई रणनीतिक चूक हुई? इनकम्बेंट दल/गठबंधन के प्रति मतदाताओं के रुख में बदलाव मंजलपुर और दतिया में क्यों नहीं दिखा?

प्रश्न उठाना आसान है, लेकिन उत्तर खोजना उतना सरल नहीं। संख्या में भले ही ये उपचुनाव मात्र तीन ही हों, लेकिन इनके नतीजे महत्वपूर्ण हैं और इसमें कोई संदेह नहीं है कि भाजपा हर चुनाव को गम्भीरता से लेती है। भाजपा के लिए सबसे अधिक चिंता का विषय बांकीपुर में उसका घटा हुआ वोट-शेयर होना चाहिए। इस सीट से पार्टी ने लगातार नौ चुनाव जीते थे और प्रत्येक चुनाव में उसे 60 प्रतिशत से अधिक वोट मिले थे, जबकि हालिया उपचुनाव में उसका मत-प्रतिशत घट गया है। (ये लेखक के अपने विचार हैं)
संजय कुमार

आपात स्थिति में घबराहट के बजाय धैर्य का चुनाव करें

पिछले हफ्ते सोमवार से बुधवार के बीच हजारों

किलोमीटर की दूरी पर स्थित दो अलग-अलग स्थानों पर दो घटनाएं हुईं। एक मध्य प्रदेश के भोपाल में और दूसरी जापान के क्यूशू द्वीप पर। भोपाल में मानसून के भारी बादल छाए हुए थे, जिनमें जापान के चिंता से भरे माहौल की झलक दिख रही थी। 'किसान क्रांति यात्रा' के तहत किसानों के विरोध प्रदर्शन ने भोपाल की मुख्य सड़क को पूरी तरह जाम कर दिया। अचानक स्कूल बंद हो गए। माता-पिता परेशान थे। दमघोंटू, उमस भरी गर्मी से हर कार ड्राइवर परेशान था। मुख्य होशंगाबाद रोड पूरी तरह ब्लॉक थी। किसी को बिजनेस प्रेजेंटेशन देना था, तो किसी को बुजुर्ग पैरेंट्स की देखभाल के लिए घर पहुंचना था। लेकिन कोई एक इंच भी आगे नहीं बढ़ सका। कई लोग फोन पर लगातार आ रहे नोटिफिकेशनों में उलझे थे। कुछ स्टीयरिंग पर हाथ मार-मार कर लगातार हॉर्न बजा रहे थे। कुछ लोगों के लिए यह हालात असहनीय थे तो वे विंडो-ग्लास नीचे कर जाम को कोसने लगे। कुछ लोगों ने समीप की छोटी गलियों में घुस कर भोपाल-जबलपुर हाईवे तक पहुंचने की कोशिश की, लेकिन इस प्रक्रिया में उन्होंने आपात स्थिति में हो सकने वाली आवाजाही को भी रोक दिया। बड़े वाहन उन गलियों में मुड़ नहीं सकते तो इस वजह से दोपहिया वाहन भी फंस गए। मैं भी उसी ट्रैफिक जाम में मौजूद था। कई लोगों ने कार चालकों से धैर्य रखने की अपील की। लेकिन सभी जल्दी घर पहुंचना चाहते थे और इस अफरातफरी में कोई भी समय से नहीं पहुंच पाया। इस अधीरता का असर यह हुआ कि कुछ लोगों को दोस्तों या रिश्तेदारों के घरों पर रात गुजारनी पड़ी, जबकि भोपाल दिल्ली से बहुत छोटा शहर है।बीते मंगलवार को ठीक इसी दौरान जापान के दक्षिणी द्वीप पर 7.1 तीव्रता का भूकंप आया। 1500 से ज्यादा इमारतें क्षतिग्रस्त हो गईं, जिनमें से 179 पूरी तरह तहस-नहस हो गईं। कई लोगों की मौत हुई और कई घायल लोग 24 से 48 घंटों तक नहीं सोए। जिनके घर क्षतिग्रस्त हुए, उनका मन चिंता से बोझिल था। संकट में इंसान की प्रवृत्ति होती है कि वह हड़बड़ाहट में जानकारी लेने के लिए चिल्लाता है, आगे जाकर देखता है कि कैसे समस्या हल हो सकती है। वह अपने परिवार के लिए हरसंभव प्रयास करने की कोशिश करता है। लेकिन द्वीप के उस तबाह हुए इलाके में बहुत से लोग कतारों में खाना-पानी लेने के लिए नहीं, बल्कि स्वयंसेवक के तौर पर उन लोगों तक खाना-पानी पहुंचाने के लिए खड़े थे, जिनके घर पूरी तरह टूट चुके थे या जो भूखे थे। कतार में खड़े कई लोगों के पैरों में दर्द था। उन्हें अपने जूतों के नीचे अब भी आफ्टरशॉक महसूस हो रहे थे, लेकिन फिर भी वे अपनी जगह खड़े रहे। यही अपने सबसे शुद्ध रूप में 'गामन' था। 'गामन' एक प्रमुख जापानी कल्चरल कॉन्सेप्ट है। इसका अर्थ है- सामाजिक सौहार्द बनाए रखना। प्राकृतिक आपदाओं, कठिनाइयों या दुखों का शांति और मजबूती के साथ सामना करना। समाज और राष्ट्र की जरूरतों को अपनी व्यक्तिगत पीड़ा से ऊपर रखना। कहीं न कहीं हम सभी ऐसे बड़े हुए हैं कि हमें तत्काल संतुष्टि चाहिए या इसे 'टू मिनट्स नूडल्स जनरेशन' भी कहा जा सकता है। लेकिन हमें अपने स्कूल जाने वाले बच्चों को 'गामन' के ये सबक जरूर सिखाने चाहिए।

यह उनकी एंग्जायटी घटाने में हमारी मदद करेगा और वो इमरजेंसी में भी शांत रहना सीखेंगे। फंडा यह है कि जब बुनियादी ढांचा चरमराए या समाज ठहर जाए तो असली मजबूती इससे नहीं मापी जाती कि आप और मैं कितनी जल्दी घर पहुंच गए। यह उन शांत पलों में दिखाई देती है, जब हम जैसे आम लोग घबराहट के बजाय धैर्य और व्यक्तिगत कुंठाओं से ऊपर सामूहिक जिम्मेदारी का चुनाव करते हैं। एन. रघुरामन

एआई को गढ़ने वाले मनुष्यता की कितनी समझ रखते हैं?

हमारे समय का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न अब यह नहीं रह गया है कि क्या एआई हमारी दुनिया को बदल देगा। वैसा तो वह पहले ही कर चुका है। लेकिन अब दुनिया को इस तकनीक के लिए एक 'मोरल-कम्पास' (नैतिक दिशानिर्देश) की जरूरत है। इसी सोच के साथ मैंने जिनेवा में आयोजित एआई फॉर गुड ग्लोबल समिट में 170 देशों से आए 12,000 से अधिक प्रतिनिधियों के समक्ष 'कम्पैशनेट एआई' की बात रखी

थी। यदि हम वास्तव में चाहते हैं कि एआई केवल लाभ और शक्ति का माध्यम न बनकर व्यापक जनहित में योगदान दे, तो हमें एआई इंजीनियरों और डेवलपर्स को एक महीने के लिए उनकी प्रयोगशालाओं से बाहर भेजना चाहिए। उन्हें खदानों और कारखानों में काम करने वाले बच्चों से मिलना चाहिए, संघर्षों के कारण विस्थापित हुए परिवारों से भेंट करनी चाहिए और गरीबी, भेदभाव तथा सामाजिक बहिष्कार झेल रहे कमजोर समुदायों के बीच समय बिताना चाहिए। उन्हें उन लोगों के साथ चलना चाहिए, जिनका जीवन टेक्नोलॉजी से ज्यादा अन्याय से प्रभावित होता है। केवल एक महीने का ऐसा अनुभव भी किसी व्यक्ति की सोच बदल सकता है और वही इस बात को प्रभावित करेगा कि डेवलपर इस तकनीक को किस दिशा में ले जाते हैं। एआई पहले ही शिक्षा, हेल्थकेयर, बिजनेस, शासन और रिसर्च को नए रूप में ढाल रहा है। लेकिन हर तकनीकी क्रांति एक नैतिक परीक्षा भी होती है और एआई अपवाद नहीं है। आज हमारे सामने सबसे बड़ा खतरा यह है कि हम सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न को ही भूल रहे हैं। और वो यह है कि आखिर यह बुद्धिमत्ता किसकी सेवा के लिए है? यह सही है कि वैश्विक मंचों पर होने वाली अधिकांश चर्चाएं पहले ही नैतिक एआई और जिम्मेदार एआई जैसी अवधारणाओं पर केंद्रित हैं, लेकिन हमें बेहतर शासन-व्यवस्था, सार्थक जवाबदेही और प्रभावी रेगुलेशन की जरूरत है। नैतिकता ही हमें बता सकती है कि क्या सही है। कानून सीमाएं तय कर सकते हैं, लेकिन वे उन लोगों की सोच नहीं बदल सकते, जो अरबों लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाली तकनीकों का निर्माण कर रहे हैं। इसके लिए और गहरी वस्तु की आवश्यकता है, और वह है- करुणा। करुणा को अकसर सहानुभूति, दयालुता या परोपकार का पर्याय समझ लिया जाता है। लेकिन यह इनमें से किसी की भी समानार्थी नहीं है और न ही यह केवल एक भावना या कोई अमूर्त नैतिक आदर्श है। करुणा की शुरुआत तब होती है, जब हम किसी दूसरे व्यक्ति के दुःख को अपना मानते हैं। यही भावना हमें उसकी पीड़ा को कम करने के लिए कदम उठाने को प्रेरित करती है। इसमें कार्रवाई करने का साहस भी शामिल होता है। करुणा हमें केवल व्यवस्थाओं को अधिक सक्षम बनाने नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा की रक्षा करने की दिशा में भी ले जाती है। कम्पैशनेट एआई दूसरे फ्रैमवर्क्स से इसलिए अलग है, क्योंकि इसकी शुरुआत तकनीक नहीं, मानवता से होती है। यह पूछने से पहले कि कोई प्रणाली क्या कर सकती है, कम्पैशनेट एआई यह पूछता है कि वह किसके लिए काम करता है। अधिक दक्षता हासिल करने से पहले यह उसके मानवीय परिणामों पर विचार करता है। इनोवेशन का उत्सव मनाने से पहले यह पूछता है कि कहीं कोई पीछे तो नहीं छूट जाएगा। आज एआई की अनेक विफलताओं, जैसे पूर्वग्रह, भेदभाव, बहिष्कार, भ्रामक सूचना, पर्यावरणीय क्षति और बच्चों के कल्याण के लिए खतरे को अकसर प्रगति के दुर्भाग्यपूर्ण दुष्प्रभावों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन ये केवल दुष्प्रभाव नहीं हैं। ये इस बात के प्रमाण भी हैं कि जब इन प्रणालियों को विकसित किया गया, तब मनुष्यता के हित की बात करने वाला कोई न कोई व्यक्ति अनुपस्थित था, उसकी अनदेखी की गई थी या उसे नजरअंदाज कर दिया गया था। आज बड़े हो रहे बच्चे संभवतः अपने माता-पिता, शिक्षकों या पड़ोसियों की तुलना में इंटेलिजेंट मशीनों के साथ अधिक समय बिताएंगे। सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों को तो हम पहले ही समझ चुके हैं। इसलिए हमें यह पूछने के बजाय कि एआई अर्थव्यवस्था को किस तरह बदल सकता है, यह पूछना चाहिए कि जब एल्गोरिदम किसी दूसरे व्यक्ति की पीड़ा को महसूस करने की मानवीय क्षमता की जगह ले लें, तो उसके क्या नतीजे होंगे। यदि उन्हें पीड़ा को पहचानने के लिए कभी तैयार ही नहीं किया गया, तो क्या वे न्याय की रक्षा कर पाएंगे? यदि उनका लक्ष्य केवल मुनाफे को बढ़ाना हो, तो क्या वे शांति पर जोर दे सकेंगे? ये नैतिक प्रश्न तकनीकी प्रश्नों से पहले पूछे जाने चाहिए, क्योंकि यही मानवता के भविष्य को आकार दे सकते हैं। एआई डेवलपरों को अपनी-अपनी प्रयोगशालाओं से निकलकर खदानों और कारखानों में काम करने वाले बच्चों से मिलना चाहिए, विस्थापित परिवारों से भेंट करनी चाहिए और गरीबी, भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार झेल रहे कमजोर समुदायों के बीच समय बिताना चाहिए। (प्रोजेक्ट सिंडिकेट) कैलाश सत्यार्थी

घर और ऑफिस में बुजुर्गों की देखभाल के लिए हमें ट्रेनिंग की जरूरत है

73 वर्षीय रिटायर्ड कारोबारी शरद कदम मुंबई के वर्सोवा में अकेले रहते हैं। उनकी पत्नी और बेटा कनाडा में हैं। 25 जुलाई की सुबह करीब 9 बजे कार चलाते वक्त उन्हें स्ट्रोक आया और कथित तौर पर वे नियंत्रण खोकर दूसरी कार से हल्का-सा टकरा गए। दुर्घटना के बाद उनकी लड़खड़ाती आवाज सुनकर आसपास के लोगों को लगा कि वे नशे में हैं। वहां मौजूद पुलिसकर्मी ने भी उन लोगों की बात पर भरोसा कर लिया। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया कि शराब पीकर गाड़ी चलाने के संदेह में उन्हें कथित तौर पर पांच घंटे तक पुलिस स्टेशन में रखा गया। नतीजतन, उनके इलाज के सबसे महत्वपूर्ण घंटे निकल गए और वे आंशिक रूप से पैरालाइज्ड हो गए। बताया जाता है कि उनके इलाज में 12 घंटे की देरी हुई और तभी से वे आईसीयू में हैं। कानून के मुताबिक, शराब पीकर गाड़ी चलाने के मामलों में पुलिस को सबसे पहले संदिग्ध को ब्लड अल्कोहल टेस्ट के लिए अस्पताल ले जाना होता है, न कि पुलिस स्टेशन। एक ओर पुलिस का दावा है कि एफआईआर दर्ज होने के बाद उन्हें सरकारी कूपर अस्पताल में ब्लड अल्कोहल टेस्ट के लिए ले जाया गया, वहां डॉक्टरों ने बताया कि वे शराब पिए हुए हैं। दूसरी ओर, उनकी एक वकील रिश्तेदार पुलिस स्टेशन पहुंचीं तो देखा कि कदम गिर पड़े थे। उन्होंने उनकी लड़खड़ाती आवाज सुनकर मेडिकल हेल्प मांगी, लेकिन पुलिस कहती रही कि वे नशे में हैं। रिश्तेदार और पुलिस के बीच इसी बहस के कारण मेडिकल असिस्टेंस में और देरी हुई और उनका दाहिना हिस्सा पैरालाइज्ड हो गया। फिर रात 8 बजे कदम को नानावटी अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहां दूसरे टेस्ट में सामने आया कि उनके ब्लड में अल्कोहल नहीं है। कूपर अस्पताल की रिपोर्ट आना अभी बाकी है।यह घटना महाराष्ट्र जैसे राज्य को लेकर एक बहस छेड़ती है, जहां 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की संख्या बढ़ रही है। जहां अधिकारियों को नहीं पता कि बुजुर्ग आबादी को कैसे संभाला जाए, वहीं आम लोग भी इससे उतने ही अनजान हैं।आंकड़ों पर नजर डालें तो मेडिकल इमरजेंसी के बाद बाथरूम या कहीं और गिरना बुजुर्गों के घायल होने की सबसे बड़ी वजह है। टोरंटो के आर्किटेक्ट लॉयड ऑल्टर कहते हैं कि 'कुछ बाथरूम तो किलर बाथरूम कहे जा सकते हैं, क्योंकि वे गीले, स्लिपरी, कीटाणुओं भरे होते हैं और उनमें लगे फिक्सचर भी जान लेने को उतारू दिखते हैं।' जब उनसे पूछा गया कि कौन-से फिक्सचर? तो उन्होंने कहा कि फ्री-स्टैंडिंग बाथटब उनमें से एक हैं। ये मैगजीन में तो बेहद आकर्षक दिखते हैं और चुस्त-दुरुस्त लोगों के लिए ठीक हैं, लेकिन बुजुर्गों के लिए खतरनाक हो सकते हैं। इसीलिए मैं जर्मनी के फ्रैंकफर्ट में एक होटल में हुए हादसे के बाद दशकों से बाथटब के इस्तेमाल से बचता रहा हूं। वहां बाथटब के किनारे बेहद पतले और गोल थे और बाहर निकलते हुए मैं स्लिप हो गया था। अगर आपके घर में भी बुजुर्ग हैं तो वहां स्टॉल शॉवर होना चाहिए, लेकिन शॉवर का टैप कंट्रोल उसी के नीचे नहीं होना चाहिए। क्योंकि, अगर वे फिसले तो उनका सिर कंट्रोल्स से टकरा सकता है। लेकिन किसी भी घर में देख लीजिए, ये कंट्रोल्स ठीक शॉवर के नीचे ही होते हैं। दुनिया में गिर कर होने वाली मौतों की संख्या बहुत ज्यादा है, भले ही यह स्ट्रोक या कैंसर जितनी न हो। बाथरूम के फर्श भी ऐसे हादसों के दूसरे बड़े कारण हैं। फर्श की फिसलन घर में होने वाले कई हादसों का बड़ा कारण बनती है। तीसरी वजह है कि जब कोई बुजुर्ग सिटिंग पोजिशन से अचानक उठ जाते हैं तो उन्हें 'ऑर्थोस्टेटिक हाइपोटेंशन' हो जाता है, यानी टॉयलेट पॉट से अचानक उठने पर ब्लड-प्रेशर तेजी से गिर जाता है। लॉयड कहते हैं कि 'जब मैगजीनों में भविष्य के बाथरूम दिखाए जाते हैं तो वे आज के ही बाथरूम होते हैं। उनमें बस कुछ गैजेट्स और कनेक्टिविटी जोड़ दी जाती है।' फंडा यह है कि जब लोगों की उम्र ज्यादा लंबी हो रही है तो हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने बुजुर्गों की ठीक से देखभाल करें, चाहे वह घर हो या सड़क।
एन. रघुरामन

घर में आप 'टीनेज लव' को कैसे संभालें?

1958 में एक बोर्डिंग स्कूल में कक्षा नौ के छात्र रहे 14 साल के थॉम स्टीनबेक ने अपने पिता को पत्र लिख कर कहा कि उन्हें

सुसान नाम की लड़की से प्यार हो गया है। बताएं कि अब उन्हें क्या करना चाहिए। पत्र के आखिर में उन्होंने पिता को यह भी समझाया कि उनकी भावनाओं को 'पप्पी लव' मानकर खारिज न करें, जिसके बारे में वे खुद अपनी किताबों में लिख चुके हैं। थॉम पिता को इतना निजी पत्र इसलिए लिख पाया, क्योंकि उसके पिता जॉन स्टीनबेक अमेरिका के महानतम लेखकों में से एक थे। आम लोगों, खासकर मजदूरों, प्रवासियों और कठिन हालात झेल रहे परिवारों के जीवन को बेहद वास्तविकता और संवेदनशीलता के साथ अपनी किताबों में उतारने के लिए उन्हें 1962 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला था। महामंदी के दौरान एक परिवार के संघर्षों पर आधारित उनकी मशहूर किताब 'द ग्रेप्स ऑफ रॉथ' को पुलित्जर मिला। अपने खुद के खेत का सपना देखने वाले दो प्रवासी मजदूरों की कहानी पर आधारित दूसरी चर्चित किताब 'ऑफ माइस एंड मेन' दुनिया भर के स्कूलों में पढ़ाई गई, मेरे स्कूल में भी। स्टीनबेक ने बेटे को जवाब देते हुए लिखा 'अगर तुम्हें प्यार हुआ है तो यह अच्छी बात है। यह किसी के भी साथ हो सकने वाली सबसे अच्छी बात है। किसी को भी इसे मामूली या कमतर मत समझने देना।' लेकिन साथ ही उन्होंने बेटे से प्यार के दो रूपों के बीच फर्क समझने को भी कहा। एक प्यार स्वार्थी, जकड़ने वाला और अहंकार से भरा होता है, जिसमें व्यक्ति खुद को बेहद अहम मानने लगता है। दूसरा, सामने वाले को अनोखा और मूल्यवान मानता है।उन्होंने बताया कि 'पहला प्यार तुम्हें छोटा और कमजोर बनाएगा। लेकिन दूसरा तुम्हें ऐसी ताकत, साहस, नेकी और समझदारी से भर देगा, जिसके बारे में तुम्हें खुद भी पता नहीं था कि ये तुम्हारे पास हैं।' मैं स्टीनबेक की नौ किताबें पढ़ चुका हूं, जिनमें 'ईस्ट ऑफ ईडन', 'कैनरी रो' और 'द पर्ल' शामिल हैं। जब मुझे अपनी पत्नी से प्यार हुआ तो मैंने उन्हें स्टीनबेक की अपने पालतू डॉग चार्ली के साथ अमेरिका यात्रा पर आधारित ट्रैवलॉग 'ट्रैवल्स विद चार्ली' गिफ्ट की थी। मैंने यह किताब इसलिए चुनी, क्योंकि मेरी पत्नी के पास भी स्नोई नाम का पालतू डॉग था, जो शादी के बाद 'दहेज' में हमारे घर आ गया। इसलिए मेरा मानना है कि स्टीनबेक ने पहले प्यार की चुनौती और गिफ्ट को बहुत अच्छे-से समझाया है। पहला प्यार आपको अपना सबसे अच्छा रूप खोजने में मदद कर सकता है, तब जबकि आपका दिल चुरा लिया गया हो और दिमाग काम करना बंद कर चुका हो। जिन पैरेंट्स के बच्चे टीनेज रोमांस से गुजर रहे हों, उन्हें यह समझना चाहिए कि यह दीवानापन हार्मोन और न्यूरोट्रांसमीटर्स का मिला-जुला नतीजा है। नॉरएपिनेफ्रिन पेट में गुदगुदी करता है, एड्रेनालिन से हथेलियों में पसीना आता है और ऑक्सीटोसिन बॉन्डिंग बढ़ाता है। ब्रेन स्टडीज बताती हैं कि रोमांटिक प्रेम में वही रिवॉर्ड सर्किट एक्टिव होते हैं, जो ड्रग एडिक्शन में होते हैं। स्टीनबेक का पत्र आज भी इसलिए प्रासंगिक है, क्योंकि उसकी शुरुआत सम्मान से होती है। वे बेटे की भावनाओं पर हंसे नहीं, न खारिज और नजरअंदाज किया। पहले उन्होंने उसकी भावना स्वीकार की और फिर सही-गलत समझाया। आज भी पैरेंट्स के लिए यह सबसे असरदार तरीका हो सकता है। टीनेज लव को हैंडल करने के कुछ व्यवहारिक तरीके यहां पेश हैं: 1. भावनाओं का मजाक न उड़ाएं: आप उनका मजाक उड़ाएंगे तो वे प्यार करना नहीं, बल्कि आपसे बात करना छोड़ देंगे। फिर वे दोस्तों या सोशल मीडिया पर निर्भर हो जाएंगे और उसके खतरे आप समझते हैं। 2. सलाह से पहले उनकी सुनें: 'यह लड़का या लड़की कौन है?' इसके बजाय यह पूछें कि 'तुम्हें इसमें क्या अच्छा लगा?' या 'इस रिश्ते से तुम्हें कैसा महसूस होता है?' किसी लेक्चर की तुलना में इन सवालों से ज्यादा बातें सामने आएंगी।

3. आकर्षण और चरित्र का फर्क समझाएं: उनसे पूछें कि क्या वह इंसान दयालु, सम्मान देने वाला और ईमानदार है? क्या वो तुम्हें बेहतर बनने के लिए प्रोत्साहित करता है? स्वार्थी और उदार प्रेम के बीच स्टीनबेक ने जो फर्क बताया, वह 1958 की तुलना में आज के इंस्टाग्राम दौर में अधिक प्रासंगिक है। 4. उनकी डिजिटल लाइफ में दिलचस्पी लें: आजकल का रोमांस अधिकतर फोन पर ही होता है। इसलिए प्राइवेसी, ऑनलाइन मेनिपुलेशन, तस्वीरों की शेयरिंग, साइबर-बुलीइंग और डिजिटल फुटप्रिंट्स के हमेशा बने रहने के जोखिमों पर उनसे चर्चा करें। फंडा यह है कि जब प्यार आपके जीवन में दस्तक दे तो किसी 'वेल-रेड' व्यक्ति की तरह उसे शांति से संभालें। एन. रघुरामन

अमेरिकी नौसेना की इजाजत के बिना कोई जहाज नहीं गुजर सकता, ईरान समझौता करे या सरेंडर,होर्मुज हमारे कंट्रोल में-ट्रम्प

वॉशिंगटन डीसी/तेहरान। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि ईरान के पास अब सिर्फ दो रास्ते बचे हैं- समझौता

करना या पूरी तरह सरेंडर करना। उन्होंने कहा कि ईरानी लीडरशिप बातचीत को लेकर दोहरा रवैया अपना रहा है। ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर लिखा- 'ईरान पहले बातचीत के लिए भीख मांगता है, लेकिन फिर सार्वजनिक तौर पर कहता है कि अमेरिका से कोई बातचीत नहीं हो रही है।' उन्होंने आगे कहा कि होर्मुज स्ट्रेट पहले से ही हमारे कंट्रोल में है और अमेरिकी नौसेना की इजाजत के बिना वहां से कोई जहाज नहीं गुजर सकता। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स-1. ट्रम्प ने फिलहाल ईरान पर हमला टालाः ट्रम्प ने दावा किया कि ईरान और दूसरे पश्चिम एशियाई देशों की ओर से समझौते का प्रस्ताव मिलने के बाद अमेरिका ने फिलहाल ईरान पर प्रस्तावित हमला टाल दिया है। 2. ईरान की चेतावनी- हमला हुआ तो अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाएंगेः ईरानी सांसद इब्राहिम रेजाई ने कहा कि अगर अमेरिका ने हमला किया तो ईरान सिर्फ खाड़ी क्षेत्र ही नहीं, बल्कि जहां-जहां अमेरिकी सैन्य ठिकाने हैं, उन्हें निशाना बनाएगा। 3. ट्रम्प और सऊदी क्राउन प्रिंस ने तनाव कम करने पर की बातः ट्रम्प और सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने फोन पर पश्चिम एशिया के हालात पर चर्चा की। दोनों नेताओं ने बातचीत और सीजफायर के जरिए तनाव कम करने पर जोर दिया। 4. अमेरिका के मिसाइल डिफेंस सिस्टम का स्टॉक तेजी से घटाः सीएसआईएस की रिपोर्ट के मुताबिक, लगातार सैन्य अभियानों के कारण अमेरिका के पैट्रियट और थाड इंटरसेप्टर मिसाइलों का भंडार तेजी से कम हुआ है। रिपोर्ट में इसे भविष्य के संभावित संघर्षों के लिए बड़ी चुनौती बताया गया है। 5. रूबियो बोले- होर्मुज स्ट्रेट का विकल्प तैयार करना होगाः अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने कहा कि दुनिया को तेल और गैस की सप्लाई के लिए सिर्फ होर्मुज स्ट्रेट पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। इसके लिए वैकल्पिक समुद्री मार्ग विकसित करने होंगे, हालांकि एक्सपर्ट्स इसे आसान नहीं मानते। ट्रम्प बोले- नई बातचीत ईरान के लिए डील करने, हमलों को रोकने का आखिरी मौका-डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि तेहरान के साथ नई बातचीत ईरान के लिए डील करने और देश पर अमेरिकी हमलों को बढ़ने से रोकने का आखिरी मौका है। ओवल ऑफिस में मौजूद ट्रम्प ने कहा- 'उम्मीद है कि अगले एक-दो दिन में ऐसी बातचीत शुरू होगी जिससे होर्मुज फिर से खुल जाएगा। इसके साथ ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम को लेकर हमारी चिंताओं को दूर करने की दिशा में आगे बढ़ सकेगा। इसमें थोड़ा समय लगेगा।' हूती धमकी के बाद 6 सऊदी सुपरटैंकरों ने रास्ता बदला-यमन के हूती विद्रोहियों की धमकी के बाद सऊदी अरब के 6 सुपरटैंकरों ने अपना समुद्री रास्ता बदल दिया है। जहाजों की ट्रैकिंग करने वाले डेटा के मुताबिक, ये टैंकर अब लाल सागर से गुजरने के बजाय अफ्रीका के दक्षिणी हिस्से का लंबा रास्ता अपनाकर जा रहे हैं। ये सभी सऊदी झंडे वाले सुपरटैंकर एशिया में तेल उतारने के बाद खाली थे। जहाजों की निगरानी करने मरीनट्रैफिक के अनुसार, ये सभी एक साथ अफ्रीका के दक्षिणी सिरे की ओर बढ़ रहे हैं और बाब-अल-मंदेब स्ट्रेट से नहीं गुजर रहे।

ईरान बोला- किसी भी खतरे का करारा जवाब देने को तैयार हैं-ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) के ग्राउंड फोर्स कमांडर मोहम्मद करामी ने कहा है कि उत्तर-पश्चिमी ईरान में तैनात लड़ाके किसी भी खतरे का करारा जवाब देने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर कहा कि ये लड़ाके खुफिया जानकारी, ऑपरेशनल तैयारी, आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक क्षमताओं के साथ हर तरह के खतरे का निर्णायक जवाब देने में सक्षम हैं।

दावा-मेरठ में कांवड़ियों के दो गुट भिड़े,गाजियाबाद में लगा जाम

लखनऊ/मेरठ/मुजफ्फरनगर/शामली। मेरठ में कांवड़ियों के दो गुटों के बीच मारपीट का मामला सामने आया है। कुछ कांवड़िए कांवड़ के साथ सड़क

किनारे बैठे थे। इसी दौरान हरिद्वार जल लेने जा रहे दो अन्य कांवड़ियों की बाइक ने उनकी कांवड़ को टक्कर मार दी। इससे कांवड़ खंडित हो गई। दोनों गुटों में बहस और मारपीट शुरू हो गई। एसअविनाश पांडेय ने बताया कि पुलिस मौके पर पहुंची। कांवड़ को बाइक से टक्कर मारने वाले सोनू और उसके साथी को जीप से ले जाने लगी, तभी कांवड़ियों ने उन पर हमला कर दिया। गाड़ी से खींचकर पीटने लगे। बीच-बचाव में सिपाही के हाथ, कंधे-चेहरे पर चोटें आईं हैं। सोमवार को गाजियाबाद और यूपी में बवाल हुआ-1. गाजियाबाद में कांवड़ खंडित होने पर कांवड़ियों ने लगाया जाम, एंबुलेंस से ट्रैक्टर-ट्रॉली टकरा गई थी गाजियाबाद के मुरादनगर में सोमवार सुबह 6 बजे कांवड़ियों से भरी ट्रैक्टर ट्रॉली और एंबुलेंस की टक्कर हो गई। हादसे में कांवड़ियों की कांवड़ खंडित हो गई। इससे नाराज कांवड़ियों ने जमकर हंगामा किया। सड़क पर बैठ गए। दिल्ली-मेरठ रोड पर लंबा जाम लगा दिया। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और कांवड़ियों को समझाकर मामला शांत कराया। 2. लखनऊ में कांवड़ियों ने स्कूल वैन में तोड़फोड़ की, चीखते-चिल्लाते रहे मासूम बच्चे लखनऊ में सोमवार सुबह 7 बजे बाइक सवार कांवड़ियों ने स्कूल वैन में तोड़फोड़ की। ड्राइवर वैन छोड़कर भाग गया। बच्चे डरकर चीखते-चिल्लाते इधर-उधर भागने लगे। मौके पर भीड़ जुटी तो कांवड़िए भी भाग निकले। बताया गया कि वैन ने कांवड़ियों को टक्कर मार दी थी। हालांकि, पुलिस का कहना है कि कांवड़िए की भेष में उपद्रवी युवकों ने वैन पर हमला किया। कहीं रावण बने कांवड़िए, कहीं घुटनों के बल चल रहे-हरिद्वार से गंगाजल लेकर दिल्ली लौट रहे मूलचंद त्यागी हर साल रामलीला में रावण का किरदार निभाते हैं। उनका कहना है कि आज दरिंदों से रक्षा के लिए हर भाई को बहन के लिए रावण बनना चाहिए। वहीं, संभल में एक कांवड़िया अपनी कांवड़ में एक तरफ योगी और दूसरी तरफ संभल एसपी केके बिश्नोई की तस्वीर लगाए है। शामली में डीएम और एसपी ने कांवड़ सेवा शिविर पहुंचकर श्रद्धालुओं पर फूल बरसाए। मेरठ के 65 साल के हरपाल नाथ हरिद्वार से 33 लीटर गंगाजल लेकर घुटनों के बल चल रहे हैं। वे पेट में रस्सी से बांधकर चार पहियों वाली कांवड़ खींच रहे हैं।

सिख गुरू पर आपत्तिजनक टिप्पणी, निहंगों ने युवक को पकड़ा,पहले भी गुरुग्राम में गाय को चिकन मोमोज खिला चुका

मानव,अमृतसर। सिख गुरु श्री गुरू नानक देव जी पर

आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले को निहंगों ने पकड़ लिया। इसके बाद उसे गुरुद्वारे में ले गए। जहां उससे माफी मंगाई गई। उसके माता-पिता भी साथ में पहुंचे। उन्होंने भी बेटे की इस हरकत को गलत करार देते हुए उसे थप्पड़ मारे। निहंगों ने चेतावनी दी कि इस बार तो माफी मिल गई। अगली बार ऐसा हुआ तो फिर इसके बाद कहीं और माफी नहीं मिलेगी। इसका वीडियो निहंग जसविंदर सिंह ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किया है। इस युवक की यह पहली हरकत नहीं है। इससे पहले वह गुरुग्राम में गाय को चिकन मोमोज खिला चुका है। तब हिंदू संगठनों ने उसे पीटा था। उससे माफी मंगवाने के बाद उस पर FIR भी दर्ज कराई थी। पहले जानिए, वायरल वीडियो में क्या दिखा? कुछ दिन पहले निहंग जसविंदर सिंह ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर एक लाइव स्ट्रीम का वीडियो साझा किया। वीडियो में एक युवती लाइव दिखाई देती है, जिसके पीछे श्री गुरु नानक देव जी की तस्वीर लगी हुई है। इसी लाइव में जुड़े एक युवक ने युवती से पूछा, 'पीछे किसकी तस्वीर लगी है?' युवती ने जवाब दिया, 'श्री गुरु नानक देव जी की।' इसके बाद युवक ने पूछा, 'क्या तुम इन्हें मानती हो?' युवती ने कहा, 'मैं सरदारों के घर की हूं, फिर क्यों नहीं मानूंगी?' युवक ने फिर सवाल किया, 'तुम्हें किसने कहा कि इन्हें मानना चाहिए?' इस पर युवती ने जवाब दिया, 'मेरे घर वालों ने।' इसी बातचीत के दौरान दूसरा युवक हंसता हुआ दिखाई देता है। यही वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद विवाद का कारण बना। वीडियो वायरल होने के बाद क्या हुआ? वीडियो सामने आने के बाद सिख संगत और निहंगों में नाराजगी देखने को मिली। इसके बाद वायरल वीडियो में दिखाई देने वाले दो युवकों में से एक को निहंगों ने पकड़ लिया। इसके लिए निहंग उसके गुरुग्राम स्थित घर पर पहुंच गए। इस दौरान पुलिस भी वहां आई। सोशल मीडिया पर साझा वीडियो के अनुसार, उसे गुरुद्वारे ले जाकर संगत के सामने सार्वजनिक रूप से माफी मंगवाई गई। वीडियो में उसके माता-पिता भी दिखाई देते हैं, जो बेटे के व्यवहार पर नाराजगी जताते हुए उसे थप्पड़ मारते हुए नजर आते हैं। युवक ने कहा- मुझसे गलती हुई है। वैसी गलती फिर कभी नहीं करूंगा। इस मामले में पुलिस या संबंधित युवकों की ओर से कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। वायरल वीडियो में दिखाई देने वाले दूसरे युवक के बारे में फिलहाल कोई नई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। इन युवकों की इस तरह की यह पहली हरकत नहीं है। करीब 8 महीने पहले इन दोनों युवकों ने गुरुग्राम में गाय को चिकन मोमोज खिला दिए थे। युवक को सोशल मीडिया एप पर मोमोज खाने का टास्क मिला था, लेकिन वह पूरा नहीं कर पाया। इसके बाद सेक्टर 56 में उसने बचे हुए मोमोज की प्लेट गाय के सामने कर दी। युवक लाइव स्ट्रीमिंग के दौरान यह सब किया।

सरकार ने मेटा ग्लोबल टीम को दिया समन,यौन शोषण कंटेंट कंट्रोल में चूक का मामला

नयी दिल्ली। भारत सरकार और मेटा की ग्लोबल टीम के बीच 5 और 6 अगस्त को एक

अहम बैठक होने जा रही है। केंद्र सरकार ने फेसबुक और इंस्टाग्राम की मूल कंपनी मेटा के प्रतिनिधियों को समन भेजकर तलब किया है। केंद्र सरकार इस बैठक में चाइल्ड सेक्सुअल एब्यूज मटीरियल यानी क्सम पर लगाम लगाने में हुई चूक, फर्जी/सिंथेटिक एआई कंटेंट और बड़े नेताओं के वेरिफाइड अकाउंट्स पर गलत कार्रवाई जैसे संवेदनशील मुद्दों को उठाएगी। इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय ने मेटा द्वारा अब तक दिए गए जवाबों को नाकाफी माना है। यह बैठक हाल ही में फेसबुक पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक वीडियो पोस्ट के कुछ समय के लिए हट जाने के विवाद के बाद तय की गई है। इस घटना के बाद सरकार ने मेटा के प्लेटफॉर्म्स की कंटेंट मॉडरेशन नीतियों, ऑटोमेटेड सिस्टम और बिग-टेक कंपनियों की जवाबदेही पर निगरानी सख्त कर दी है। हालांकि, सूत्रों के मुताबिक मेटा ने पीएम मोदी के वीडियो के हटने पर खेद व्यक्त किया है और वह इसके लिए औपचारिक माफी मांगने को भी तैयार है। दरअसल, पीएम मोदी ने 23 जुलाई को पेपर लीक को गंभीर विषय बताते हुए एक वीडियो जारी किया था। इसे मेटा ने रात 12:30 बजे से सुबह 5:00 बजे तक हटा दिया था। लेकिन बाद में उसे रिस्टोर कर दिया गया। मेटा ने अपनी सफाई में कहा कि दरअसल, यह एक टेक्निकल एरर था। मेटा केवल वीआईपी पोस्ट हटाने के मामले में ही नहीं, बल्कि सुरक्षा संबंधी अन्य गंभीर मामलों में भी जांच के दायरे में है। इससे पहले इंस्टाग्राम पर पेड एड्स यानी प्रायोजित विज्ञापनों के जरिए चाइल्ड क्सम वेज प्रचार-प्रसार को लेकर सरकार ने मेटा को कारण बताओ नोटिस जारी किया था। 5-6 अगस्त की बैठक में सरकार यह भी समीक्षा करेगी कि उस नोटिस के बाद कंपनी ने क्या सुधारात्मक कदम उठाए हैं। बीबीसी की रिपोर्ट में दावा किया गया है कि इंस्टाग्राम पर चाइल्ड सेक्शुअल एब्यूज मेटेरियल मौजूद हैं। भारत में इंस्टाग्राम पर ऐसे पेड विज्ञापन चल रहे थे, जिनमें 'रेप वीडियो' और 'चाइल्ड वीडियो' जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया था। इन विज्ञापनों पर क्लिक करने के बाद यूजर्स को टेलीग्राम चैनलों पर भेजा जाता था, जहां कथित तौर पर बच्चों के यौन शोषण से जुड़ा कंटेंट बेहद कम कीमत 99 रुपए में बेचा जा रहा था।

रिपोर्ट के मुताबिक, इंस्टाग्राम पर दिखने वाले सभी विज्ञापन पहले मेटा के मॉडरेशन सिस्टम से मंजूरी मिलने के बाद ही लाइव होते हैं। बीबीसी ने जब ऐसे ही एक विज्ञापन की शिकायत इंस्टाग्राम से की, तो करीब 24 घंटे बाद कंपनी ने जवाब दिया कि यह पोस्ट उसकी कम्यूनिटी गाइडलाइन का उल्लंघन नहीं है। इसके बाद बीबीसी ने मेटा से इस मामले पर जवाब मांगा।

तब कंपनी ने कहा कि उसने कई विज्ञापनों को हटा दिया है, संबंधित अकाउंट्स को सस्पेंड किया है और उन यूआरएल को हटा देने का दावा किया। मेटा ने यह भी माना कि कोई भी मॉडरेशन सिस्टम पूरी तरह परफेक्ट नहीं होता और रिव्यू प्रोसेस हर नियम उल्लंघन की पहचान नहीं कर पाती।

संसद में राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले पर हंगामा,खड़गे बोले- ईडी कहां है, रिजिजू ने कहा- विपक्ष घड़ियाली आंसू बहा रहा

नयी दिल्ली। संसद के मानसून सत्र के 12वें दिन राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का

मंदिर चढ़ावा चोरी मामले को लेकर दोनों सदनों में जमकर हंगामा हुआ। मंगलवार को लोकसभा की कार्यवाही सिर्फ 19 मिनट चल पाई। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन ने इस दौरान

टैक्स संशोधन से जुड़े बिल पेश किए। इसके बाद सदन बुधवार तक के लिए स्थगित हो गई। राज्यसभा की कार्यवाही दिन में दो बार स्थगित हुई। 11 बजे कार्यवाही शुरू होने के आधे घंटे के भीतर स्थगित भी हो गई। दोपहर 12 बजे कार्यवाही दोबारा शुरू हुई, लेकिन 20 मिनट ही चल पाई। दोपहर 2 बजे कार्यवाही फिर शुरू हुई। इससे पहले राज्यसभा में नेता विपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू के बीच बहस हुई। खड़गे ने कहा- राम मंदिर ट्रस्ट को 70 एकड़ से ज्यादा जमीन सौंपी। पीएम खुद राम मंदिर से जुड़े हर आयोजन में शामिल हुए। अब ईडी, सीबीआई और अन्य केंद्रीय जांच एजेंसियां कहां हैं।

सरकार को सदन में इसका जवाब देना चाहिए। इस पर संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा- कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने राम मंदिर बनने पर काली पट्टी बांधकर विरोध किया था। आज वही लोग घड़ियाली आंसू बहाकर देश को गुमराह नहीं कर सकते। पहले भगवान राम का अपमान करने के लिए देश से माफी मांगिए, उसके बाद सरकार से जवाब मांगिए।

राहुल गांधी बोले- आरएसएस इतिहास बदलने की कोशिश कर रहा,देश बर्दाश्त नहीं करेगा

नयी दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने

मंगलवार को कहा कि देश के छात्र गंभीर दर्द में हैं। उन्हें पीएम नरेंद्र मोदी की माफी की जरूरत नहीं है, बल्कि वे चाहते हैं कि पीएम अपने सरकार के कामों के लिए माफी मांगें। छात्र सड़कों पर इसलिए हैं क्योंकि आरएसएस देश का इतिहास बदलने की कोशिश कर रहा है। भारत अपने इतिहास के कुचले जाने को बर्दाश्त नहीं करेगा। राहुल गांधी पूर्व सांसद वाइको की किताब के विमोचन कार्यक्रम में बोल रहे थे। छात्रों के पास काम नहीं, परीक्षा में निष्पक्षता चाहते हैं-राहुल ने कहा कि हम अजीब दौर से गुजर रहे हैं, जहां छात्र सड़कों पर हैं, उनके पास काम नहीं है और वे परीक्षाओं में निष्पक्षता तथा एक बेहतर शिक्षा प्रणाली की मांग कर रहे हैं। दूसरी तरफ पीएम उन्हें माफ कर रहे हैं। राहुल ने कहा कि उन्हें नहीं पता कि पीएम को यह विचार कहां से आता है कि वे उन्हें या भारत के भविष्य को माफ कर सकते हैं। हर राज्य के साथ निष्पक्ष व्यवहार हो-राहुल गांधी ने दावा किया कि पीएम या आरएसएस के पीछे एक खतरनाक विचार है। कुछ ऐसे नासमझ लोग हैं जो तमिल, मराठी और बंगाली लोगों को नहीं समझते और कहते हैं कि इनमें से कोई भी इतिहास या कल्पना काम की नहीं है। संविधान में स्पष्ट लिखा है कि इंडिया, यानी भारत, राज्यों का एक संघ है और राज्य भारत के लोगों की अभिव्यक्ति हैं। कार्यक्रम में ये नेता मौजूद रहे-इस पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में तमिलनाडु के शिक्षा मंत्री ए राजमोहन, टीएमसी नेता सागरिका घोष, कांग्रेस नेता पी चिदंबरम और मणिकम टैगोर मौजूद थे। इनके अलावा जम्मू-कश्मीर के पूर्व सीएम फारूक अब्दुल्ला, सीपीएम महासचिव एम ए बेबी, सीपीआई महासचिव डी राजा, शिवसेना नेता संजय राउत, आरजेडी नेता मनोज कुमार झा, आरएसपी के एन के प्रेमचंद्रन और एनसीपी-एसपी नेता सुप्रिया सुले भी कार्यक्रम में शामिल हुए।

रांची में दिल्ली जैसा छात्रों का आंदोलन,10 दिनों से धरना,सीजेपी का सपोर्ट,6 अगस्त को विधानसभा का घेराव, हेमंत सरकार ने बात नहीं की

रांची। झारखंड की राजधानी रांची में जेपीएससी और जेपीएसएससी पेपर लीक को लेकर पिछले 10 दिनों से छात्रों का प्रदर्शन जारी है। रांची के जयपाल सिंह स्टेडियम में छात्र दिल्ली के जंतर-मंतर की तर्ज पर आंदोलन कर रहे हैं। छात्रों की मांग है कि जेपीएससी और जेपीएसएससी की परीक्षाएं रद्द की जाएं और पेपर लीक करने वालों पर कार्रवाई की जाए। अपनी बात सरकार तक पहुंचाने के लिए छात्रों ने मशाल जुलूस समेत कई तरह के प्रदर्शन किए हैं। 10 दिन बीत जाने के बाद राज्य सरकार छात्रों से बातचीत के लिए तैयार हुई है। सरकार ने इसके लिए एक कमेटी बनाने का निर्णय लिया है। हालांकि, हेमंत सरकार का कोई भी प्रतिनिधि अब तक छात्रों से बातचीत करने नहीं पहुंचा है। मंच ने 6 अगस्त को विधानसभा मार्च का आह्वान किया है। आंदोलनकारियों का दावा है कि बिहार, पश्चिम बंगाल, दिल्ली और गुजरात समेत कई राज्यों से छात्रों और सामाजिक संगठनों का समर्थन मिल रहा है। छात्रों ने खुद का बना रखा है संविधान-दिल्ली में हुए छात्र आंदोलन की तर्ज पर यहां भी आंदोलन हो रहा है, लेकिन यह आंदोलन कुछ मायनों में अलग है। पिछले 10 दिनों में न तो छात्र उग्र हुए, न बयानबाजी हुई और न ही लाठीचार्ज की नौबत आई। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि छात्रों ने अपने आंदोलन में राजनीतिक दलों की सीधी एंट्री पर रोक लगा रखी है। इतना ही नहीं, छात्रों ने अपने लिए एक कोड ऑफ कंडक्ट भी तय किया है। इस कोड ऑफ कंडक्ट के तहत छात्र चार बातों का विशेष ध्यान रख रहे हैं। मंच से राजनीतिक, धार्मिक या जातिगत बयानबाजी नहीं होगी। वक्ता केवल आंदोलन के मूल मुद्दों पर ही बोलेंगे। किसी व्यक्ति विशेष पर व्यक्तिगत आरोप नहीं लगाए जाएंगे और भाषण के दौरान अपशब्दों के प्रयोग से भी बचा जाएगा। आंदोलन के दौरान इन नियमों का सख्ती से पालन करने की अपील की गई है। वहीं, जेपीएससी और जेपीएसएससी अभ्यर्थी न्याय मंच के नेता देवेंद्र महतो ने लगातार तीसरे दिन भी भूख हड़ताल जारी रखी। तबीयत

बिगड़ने के बावजूद उन्होंने आंदोलन जारी रखने की बात कही। उन्होंने घोषणा की कि आज की भूख हड़ताल दिशोम गुरु स्वर्गीय शिबू सोरेन को समर्पित रहेगी। छात्रों के सपोर्ट में उतरी सीजेपी-जेपीएससी और जेपीएसएससी भर्ती परीक्षाओं में कथित गड़बड़ी के खिलाफ धरने पर बैठे छात्रों को अब कॉरोच जनता पार्टी (सीजेपी) का भी समर्थन मिल गया है। पार्टी के संस्थापक अभिजीत दिपके ने आंदोलनरत छात्रों से बातचीत करने की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सीजेपी झारखंड के छात्रों के समर्थन में है और उनकी मांगों का समर्थन करती है। छात्रों को समर्थन देते हुए अभिजीत दिपके ने सोशल मीडिया पर लिखा कि उन्होंने झारखंड में आंदोलन कर रहे अभ्यर्थियों से बात की है। उन्होंने कहा कि सीजेपी इस लड़ाई में पूरी तरह छात्रों के साथ है और उनकी सभी जायज मांगों का समर्थन करती है। वहीं, सीजेपी के प्रवक्ता आशुतोष रांका ने भी सोशल मीडिया पर पोस्ट साझा की। उन्होंने लिखा कि उनका संगठन झारखंड के युवाओं के साथ मजबूती से खड़ा है। गुजरात -दिल्ली से ऑनलाइन बुक हो रहा खाना-छात्रों के धरना-सत्याग्रह आंदोलन को अब भारी जनसमर्थन मिलने लगा है। आंदोलनरत छात्रों को शुरुआत में रहने और खाना-पानी के खर्च की चिंता थी, लेकिन अब वे काफी हद तक निश्चिंत हो गए हैं। गुजरात और दिल्ली समेत कई जगहों से छात्रों के लिए ऑनलाइन खाना बुक कराया जा रहा है। डिलीवरी ब्वॉय लगातार आंदोलन स्थल पर खाना और पानी पहुंचा रहे हैं।

सन्नी देओल बोले- 'भारत मेरी मां तो पाकिस्तान मौसी है' ,फिल्म 'बंटवारा 1947' के प्रमोशन के दौरान दिया बयान-हुई ट्रोलिंग

मुंबई। फिल्म 'बंटवारा 1947' की रिलीज से पहले सनी देओल अपने एक बयान को लेकर विवादों में आ गए। पटना में फिल्म के प्रमोशन के दौरान उन्होंने अपने पिता धर्मेंद्र के एक पुराने बयान का जिक्र करते हुए पाकिस्तान को मौसी बताया, जिसके बाद सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने उन्हें ट्रोल किया।दरअसल सनी से सवाल किया गया कि यह मूवी, जो पाकिस्तान में शूट की गई है, तो आप पाकिस्तान को एक देश या माहौल के तौर पर कैसे देखते हैं? क्या आप कुछ बताना चाहेंगे? इस पर सनी ने बताया कि फिल्म की शूटिंग पाकिस्तान में नहीं हुई, बल्कि फिल्म हिंदुस्तान में ही शूट हुई है। उन्होंने आगे कहा, 'हम कोई ऐसी बातें नहीं करते, क्योंकि पूरा देश एक ही था। जैसे पापा ने कहा था कि मेरी मां (भारत) तो वो मेरी मौसी (पाकिस्तान) है, जो आप लोग अच्छी तरह से समझते

हैं। हम सब एक तरह से हैं, तो कहीं न कहीं से जुड़े हुए हैं।' सनी देओल के इस बयान पर सोशल मीडिया पर कई लोगों ने प्रतिक्रिया दी। कुछ यूजर्स ने उनके बयान की आलोचना की। एक यूजर ने लिखा, 'सनी देओल हर नए वीडियो से अपनी छवि को और नुकसान पहुंचा रहे हैं।' वहीं एक अन्य यूजर ने लिखा, 'पूरे परिवार को बर्बाद करने वाली मौसी वाली बात सही है।' 'बंटवारा 1947' विभाजन की कहानी पर आधारित है-बता दें कि सनी देओल की अपकमिंग फिल्म 'बंटवारा 1947' भारत के विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित है। फिल्म की कहानी हिंसा, विस्थापन और पारिवारिक संघर्ष से जूझ रहे एक परिवार के इर्द-गिर्द घूमती है। फिल्म में सनी देओल के साथ शबाना आजमी, प्रीति जिंटा, अली फजल और अभिमन्यु सिंह भी अहम भूमिकाओं में हैं। फिल्म की रिलीज से पहले सनी देओल रविवार देर शाम पटना में स्थित तख्त श्री हरमंदिर जी पटना साहिब पहुंचे। यहां उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह जी के जन्मस्थान पर मत्था टेककर आशीर्वाद लिया। गुरुद्वारा प्रबंधन कमेटी के पदाधिकारियों ने सनी देओल का पारंपरिक तरीके से स्वागत किया। उन्हें सिरोपा भेंट कर सम्मानित किया गया और गुरु घर की परंपराओं से अवगत कराया गया। इसके बाद उन्होंने फिल्म के प्रमोशन में हिस्सा लिया। गुरु इतिहास की जानकारी के साथ पूरा गुरुद्वारा घूमा-सनी देओल लगभग 20 मिनट तक गुरुद्वारा परिसर में रहे। इस दौरान उन्होंने तख्त श्री हरमंदिर साहिब के विभिन्न हिस्सों का भ्रमण किया, गुरु इतिहास की जानकारी ली और श्रद्धालुओं के साथ समय बिताया। उन्होंने गुरु का पावन प्रसाद भी ग्रहण किया। दर्शन के बाद सनी देओल ने कहा कि गुरु के दरबार में आकर उन्हें अद्भुत शांति और आत्मिक सुकून का अनुभव हुआ। उन्होंने बताया, 'मेरा हमेशा से मन था कि जब भी बिहार आऊं, सबसे पहले तख्त श्री हरिमंदिर साहिब में मत्था टेककर गुरु महाराज का आशीर्वाद जरूर लूं। आज मेरा यह सपना पूरा हो गया।'

बच्चे के सिर का आकार बड़ा है,लापरवाही न करें, ये हाइड्रोसेफेलस हो सकता है,समझें इस बीमारी से बचाव और इलाज

नोएडा। क्या आपने कभी किसी ऐसे बच्चे को देखा है, जिसका सिर सामान्य से ज्यादा बड़ा हो। जन्म के बाद अगर

किसी बच्चे का सिर सामान्य से ज्यादा तेजी से बढ़ने लगे, बार-बार उल्टी हो, सुस्ती रहे या उसकी आंखें नीचे की ओर टिकी दिखाई दें तो इसे सामान्य विकास मानकर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। यह 'हाइड्रोसेफेलस' का संकेत हो सकता है। इसे आम भाषा में 'ब्रेन में पानी भरना' कहते हैं। लेकिन इसमें पानी नहीं, बल्कि सीएसएफ सेरेब्रोस्पाइनल फ्लूइड) नाम का तरल जमा होता है। समय पर इलाज न मिले तो यह दिमाग को स्थायी नुकसान पहुंचा सकता है, लेकिन अच्छी बात यह है कि सही समय पर पहचान और उपचार से ज्यादातर मरीज सामान्य जीवन जी सकते हैं। 'नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ' (एनआईएच) में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, दुनियाभर में हर साल 4 लाख से ज्यादा बच्चों में हाइड्रोसेफेलस के नए मामले सामने आते हैं। वहीं, हर 1 लाख लोगों में औसतन 85 लोग इस बीमारी से प्रभावित होते हैं। इड्रोसेफेलस क्यों होता है? इसके शुरूआती संकेत क्या हैं? किन लोगों को रिस्क ज्यादा होता है? विषय को समझेंगे 'फिजिकल हेल्थ' में आज हाइड्रोसेफेलस के बारे में विस्तार से बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि-एक्सपर्ट- डॉ. सोनिया लाल गुप्ता, सीनियर न्यूरोलॉजिस्ट, मेट्रो ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स, जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- हाइड्रोसेफेलस क्या है? क्या यह सिर्फ 'दिमाग में पानी भर जाना' है या मामला इससे अलग है?जवाब- 'हाइड्रोसेफेलस' शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है। 'हाइड्रो' यानी पानी और 'सेफेलस' का मतलब है- सिर। इसी वजह से इसे 'दिमाग में पानी भर जाना' कहते हैं, लेकिन यह पूरी तरह सही नहीं है। इसमें पानी नहीं, बल्कि सीएसएफ (सेरेब्रोस्पाइनल फ्लूइड) नाम का साफ, कलरलेस फ्लूइड जमा होता है। यह ब्रेन और रीढ़ की हड्डी को प्रोटेक्ट करता है। सीएसएफ जमा होने से ब्रेन पर प्रेशर बढ़ने लगता है और उसका सामान्य कामकाज प्रभावित हो सकता है। सवाल- ब्रेन में सेरेब्रोस्पाइनल फ्लूइड (सीएसएफ) क्या काम करता है? जवाब- सीएसएफ ब्रेन और रीढ़ की हड्डी के लिए सुरक्षा कवच की तरह काम करता है। नीचे पॉइंटर्स से डिटेल में समझिए- ब्रेन और रीढ़ की हड्डी को झटकों और चोटों से बचाता है। ब्रेन तक जरूरी पोषक तत्व पहुंचाने में मदद करता है। ब्रेन की सेल्स से बनने वाले अपशिष्ट पदार्थों को हटाने में मदद करता है। यह ब्रेन के अंदर लगातार बनता और बहता रहता है। काम पूरा होने के बाद शरीर इसे रक्त में दोबारा अवशोषित कर लेता है। जब यह प्रक्रिया बाधित हो जाती है, तब सीएसएफ ब्रेन में जमा होने लगता है। सवाल- हाइड्रोसेफेलस कैसे विकसित होता है? जवाब- सामान्य स्थिति में ब्रेन के अंदर जितना सीएसएफ बनता है, उतना ब्लड में अवशोषित हो जाता है। लेकिन अगर किसी वजह से सीएसएफ का फ्लो रुक जाए या ब्लड इसे ठीक से अवशोषित न कर पाए, तो यह ब्रेन में जमा होने लगता है। इससे ब्रेन के अंदर मौजूद वेंट्रिकल्स बड़े हो जाते हैं और ब्रेन पर प्रेशर बढ़ने लगता है। यही स्थिति हाइड्रोसेफेलस कहलाती है। सवाल- हाइड्रोसेफेलस कितने प्रकार का होता है? जवाब- हाइड्रोसेफेलस मुख्य रूप से 4 प्रकार का होता है। 1. कम्युनिकेटिंग हाइड्रोसेफेलस- इसमें सीएसएफ बाहर निकलने के बाद उसका फ्लो रुक जाता है या वह ठीक से एब्जॉर्ब नहीं हो पाता। 2. नॉन-कम्युनिकेटिंग (ऑब्स्ट्रक्टिव) हाइड्रोसेफेलस- सीएसएफ का रास्ता ब्रेन के अंदर ही ब्लॉक हो जाता है, जिससे फ्लूइड जमा होने लगता है।3. नॉर्मल प्रेशर हाइड्रोसेफेलस (एनपीएच) सीएसएफ धीरे-धीरे जमा होता है। वेंट्रिकल्स बड़े हो जाते हैं, लेकिन दबाव सामान्य रहता है। यह अक्सर बुजुर्गों में होता है। 4. हाइड्रोसेफेलस एक्स-वैकुओ-सिर में चोट या स्ट्रोक के बाद ब्रेन सिकुड़ने से बनी खाली जगह में सीएसएफ भर जाता है। इसमें आमतौर पर दबाव नहीं बढ़ता। सवाल- किन लोगों को इसका रिस्क ज्यादा होता है? जवाब- कुछ लोगों में इसका रिस्क ज्यादा होता है। जैसे- प्री-मेच्योर बेबी, जिनके ब्रेन में ब्लीडिंग हुई हो। जिन नवजात और छोटे बच्चों को जन्म से ब्रेन से जुड़ी समस्या हो। जिन्हें ब्रेन ट्यूमर या मेनिन्जाइटिस हो। जिन्हें ब्रेन स्ट्रोक हुआ हो। जिनके सिर में गंभीर चोट लगी हो। जिनकी उम्र 60 साल से ज्यादा हो। सवाल- हाइड्रोसेफेलस क्यों होता है? जवाब- इसके कारणों को 2 हिस्सों में बांटा जाता है। 1. जन्मजात- कुछ बच्चों में जन्म से ही यह समस्या होती है। इसकी वजह प्रेग्नेंसी के दौरान जेनेटिक या भ्रूण के विकास से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं।2. जन्म के बाद होने वाला-यह किसी भी उम्र में हो सकता है। जन्मजात- गर्भ में ब्रेन विकसित न होना, स्पाइना बिफिडा, प्रेग्नेंसी में इन्फेक्शन, संक्रमण मेनिन्जाइटिस, एन्सेफलाइटिस। सिर में चोट-ब्रेन स्ट्रोक, ब्रेन में ब्लीडिंग, सिर में चोट, सड़क दुर्घटना, ब्रेन ट्यूमर या सिस्ट। हाइड्रोसेफेलस के लक्षण हर उम्र में एक जैसे नहीं होते। शिशुओं, बच्चों, वयस्कों और बुजुर्गों में इसके संकेत अलग-अलग हो सकते हैं। ग्राफिक में उम्र के अनुसार इसके सभी संकेत पढ़िए। नवजात शिशु (0-1 वर्ष) सिर का आकार तेजी से बढ़ना। सिर का ऊपरी मुलायम हिस्सा उभरना। बार-बार उल्टी होना। दूध पीने में दिक्कत। बहुत ज्यादा नींद, सुस्ती। आंखें नीचे की ओर टिकना। बार-बार दौरे पड़ना। बार-बार दौरे पड़ना। छोटे बच्चेः- सिरदर्द, बार-बार उल्टी, चलने में परेशानी, स्पेटल्स, न सीखने में कठिनाई। विकास की धीमी गति, धुंधला या दोहरा दिखना, वयस्कः-लगातार सिरदर्द, मतली और उल्टी, डबल विजन, धुंधला दिखना, संतुलन बिगड़ना याददाश्त कम होना। बुजुर्गः- चलने में पैर घिसटना/ लड़खड़ाना। बार-बार गिरना। भूलने की समस्या। पेशाब पर नियंत्रण कम होना। कई बार लोग सिरदर्द, मतली, लड़खड़ाकर चलने या भूलने जैसी समस्याओं को सामान्य परेशानी या बढ़ती उम्र का असर समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। शुरुआती संकेत लोग क्या समझते हैं? बार-बार सिरदर्द, सामान्य माइडेन, सुबह, गैस बदहजमी, धुंधला दोहरा दिखना, आंखों का बड़ा नंबर, हुए लड़खड़ाना, बढ़ती उम्र, भूलने लगता, उम्र का असर, चिड़चिड़ापन, नाव या मूड स्विंग,

पढ़ाई में गिरावट, ध्यान की कमी, शिशु का सिर बढ़ना, सामान्य विकास। सवाल- डॉक्टर हाइड्रोसेफेलस की पुष्टि कैसे करते हैं? इसके लिए कौन से टेस्ट किए जाते हैं? जवाब- डॉक्टर मरीज के लक्षणों के आधार पर जरूरत के अनुसार ये टेस्ट कराते हैं-एमआरआई स्कैन- ब्रेन में सीएसएफ की मात्रा और वेंट्रिकल्स का साइज देखने के लिए। सिटी स्कैन- ब्रेन में सूजन, ब्लीडिंग या सीएसएफ जमा होने का पता लगाने के लिए। अल्ट्रासाउंड- साउंड वेव्स से नवजात के ब्रेन की तस्वीरें लेकर सीएसएफ और वेंट्रिकल्स की स्थिति देखने के लिए। न्यूरोलॉजिकल और मेमोरी टेस्ट- बैलेंस, याददाश्त और सोचने-समझने की क्षमता का आकलन करने के लिए। स्पाइनल टैप- कुछ मामलों में सीएसएफ निकालकर जांच की जाती है। इससे नॉर्मल प्रेशर हाइड्रोसेफेलस का आकलन करने में मदद मिलती है। सवाल- हाइड्रोसेफेलस का इलाज क्या है? क्या यह दवा से ठीक हो सकता है? जवाब- इसका इलाज बीमारी के कारण, गंभीरता और मरीज की उम्र पर निर्भर करता है। ज्यादातर मामलों में यह सिर्फ दवाओं से ठीक नहीं होता। जब ब्रेन में सीएसएफ ज्यादा जमा हो जाता है, तो उसे बाहर निकालने के लिए सर्जरी की जरूरत पड़ती है। जैसेकि- शंट सर्जरीः एक पतली ट्यूब लगाकर एक्स्ट्रा सीएसएफ को शरीर के दूसरे हिस्से, जैसे पेट में पहुंचाया जाता है। एंडोस्कोपिक थर्ड वेंट्रिकुलोस्टॉमी (ईटीवी)ः कुछ मरीजों में ब्रेन के अंदर सीएसएफ के फ्लो के लिए नया रास्ता बनाया जाता है। सवाल- इलाज में देरी हो तो क्या कॉम्प्लिकेशंस हो सकते हैं? जवाब- समय पर इलाज न होने पर कई तरह के कॉम्प्लिकेशंस हो सकते हैं, जैसेकि- याददाश्त और सीखने की क्षमता में कमी। चलने-फिरने और संतुलन बनाने में दिक्कत। नजर कमजोर होना या दृष्टि चली जाना। बार-बार दौरे पड़ना। ब्रेन को स्थायी नुकसान। गंभीर मामलों में जान जा सकती है। सवाल- सर्जरी के बाद किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है? क्या मरीज उसके बाद सामान्य जीवन जी सकता है? जवाब- हां, लेकिन सर्जरी के बाद कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है। जैसेकि- डॉक्टर की सलाह के अनुसार रेगुलर फॉलोअप करें। सर्जरी वाली जगह में दर्द, सूजन या बुखार हो तो तुरंत डॉक्टर से कंसल्ट करें। अचानक सिरदर्द, उल्टी, धुंधला दिखना या चलने में दिक्कत हो, तो टेस्ट कराएं। दवाएं समय पर लें और खुद से बंद न करें। बच्चों में सिर के आकार, विकास और पढ़ाई-लिखाई पर नजर रखें। हाइड्रोसेफेलस में इलाज के बाद भी पेशेंट की निगरानी जरूरी होती है। नए लक्षण दिखने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें, क्योंकि कुछ मामलों शंट या बीमारी से जुड़ी समस्याएं दोबारा हो सकती हैं। सवाल- क्या हाइड्रोसेफेलस को होने से रोका जा सकता है? किन मामलों में जोखिम कम हो सकता है? जवाब- हर मामले में हाइड्रोसेफेलस को रोका नहीं जा सकता, खासकर अगर यह जेनेटिक हो। लेकिन कुछ उपायों से इसका रिस्क कम किया जा सकता है। इसके लिए-प्रेग्नेंसी के दौरान रेगुलर चेकअप कराएं। प्रेग्नेंसी में संक्रमण से बचाव करें। सिर की चोट से बचने के लिए हेलमेट और सीट बेल्ट का इस्तेमाल करें।मेनिन्जाइटिस जैसे इन्फेक्शन का समय पर इलाज कराएं। ब्रेन से जुड़ी समस्या का समय पर इलाज कराएं। सवाल- किन लक्षणों को मेडिकल इमरजेंसी मानना चाहिए और तुरंत हॉस्पिटल जाना चाहिए? जवाब- इन स्थितियों में तुरंत अस्पताल जाना चाहिए- अगर मरीज बेहोश हो जाए या दौरे पड़ें। बार-बार तेज उल्टी होने लगे। बोलने, चलने या देखने में अचानक परेशानी हो। तेज सिरदर्द के साथ कन्फ्यूजन, सुस्ती या रिस्पॉन्स कम होने लगे। शिशु दूध पीना बंद कर दे, लगातार सुस्त रहे या दौरे पड़ने लगें। सवाल- इस बीमारी से जुड़े कॉमन मिथ क्या हैं और उनकी सच्चाई क्या है? जवाब- हाइड्रोसेफेलस को लेकर लोगों के मन में कई गलतफहमियां हैं। इनकी वजह से कई बार बीमारी की पहचान और इलाज में देरी हो जाती है। हाइड्रोसेफेलस एक गंभीर बीमारी है, लेकिन लाइलाज नहीं है। समय पर पहचान और सही इलाज से इसके कारण होने वाली कई जटिलताओं से बचा जा सकता है।

किशोर कुमार को 'आनंद' में हीरो लेना चाहते थे ऋषिकेश मुखर्जी, सिर मुंडवाकर बोले थे- अब क्या करोगे

मुंबई। हिंदी सिनेमा के सबसे बहुमुखी कलाकारों में किशोर कुमार का नाम सबसे ऊपर लिया जाता है। उन्होंने अभिनय, संगीत, निर्देशन और फिल्म निर्माण किया,

लेकिन उनकी सबसे बड़ी पहचान उनकी आवाज बनी। चार दशक तक उन्होंने मोहम्मद रफी, मुकेश और मन्ना डे जैसे दिग्गजों के बीच अपनी अलग जगह बनाई। जितने शानदार वे गायक थे, उतनी ही रहस्यमयी उनकी निजी जिंदगी थी। कोई उन्हें सनकी कहता था, कोई जीनियस, तो कोई उनकी संवेदनशीलता का कायल था। उनके व्यक्तित्व के कई रंग थे, जिन्हें सिर्फ करीबी लोग ही समझ पाए। 4 अगस्त 1929 को मध्य प्रदेश के खंडवा में जन्मे किशोर कुमार की 97वीं बर्थ एनिवर्सरी पर पढ़िए उनकी जिंदगी के कुछ दिलचस्प किस्से, जो बताते हैं कि पर्दे पर लोगों को हंसाने वाला यह कलाकार असल जिंदगी में कितना अलग था। बचपन की एक चोट और उससे जुड़ा उनकी आवाज का सबसे चर्चित किस्सा- किशोर कुमार की आवाज दुनिया की सबसे अलग आवाजों में गिनी जाती है। उनके सुरों के खुरदरेपन, लचक और सहजता से जुड़ा एक पारिवारिक संस्मरण चर्चित है। बड़े भाई अशोक कुमार ने कई इंटरव्यू में बताया था कि बचपन में किशोर के पैर में गहरी चोट लगी थी। दर्द इतना था कि वे घंटों रोते रहे। परिवार का मानना था कि लंबे समय

तक रोने से उनकी आवाज का टेक्सचर बदल गया और वही आगे चलकर उनकी पहचान बना। कॉलेज की कैंटीन का उधार, जिसने 'पांच रुपैया बारह आना' को जन्म दिया-इंदौर के क्रिश्चियन कॉलेज में पढ़ाई के दौरान किशोर कुमार की शरारतें मशहूर थीं। वे अक्सर कैंटीन में उधार पर पोहा और जलेबी खाते थे। धीरे-धीरे उधार पांच रुपया बारह आना हो गया। कैंटीन मालिक पैसे मांगता, तो किशोर कुमार गाकर उसे टालने की कोशिश करते। वर्षों बाद फिल्म चलती का नाम गाड़ी के 'पांच रुपैया बारह आना' गीत ने धूम मचाई। माना जाता है कि इस गाने की प्रेरणा उसी उधार से मिली थी। मुंबई आए तो अभिनेता नहीं, सिर्फ गायक बनने का सपना था-किशोर कुमार अभिनेता नहीं, गायक बनना चाहते थे। वे मुंबई अपने आदर्श के.एल. सहगल की तरह गायक बनने आए थे। बड़े भाई अशोक कुमार के स्टार होने के कारण उन्हें अभिनय के प्रस्ताव मिलने लगे। शुरुआती दिनों में उन्होंने परिवार और निर्माताओं की इच्छा पर कई फिल्में कीं। बाद में उनकी कॉमिक टाइमिंग ने उन्हें सफल अभिनेता बनाया, लेकिन उन्होंने माना कि उनका पहला प्यार हमेशा गायकी ही रही। 'आनंद' पहले किशोर कुमार को ऑफर हुई थी, लेकिन एक गलतफहमी ने बदल दिया हिंदी सिनेमा का इतिहास- 1971 में रिलीज हुई ऋषिकेश मुखर्जी की फिल्म आनंद भारतीय सिनेमा की बेहतरीन फिल्मों में गिनी जाती है। टाइटल रोल के लिए राजेश खन्ना पहली पसंद नहीं थे। गीतकार-लेखक गुलजार ने अपनी संस्मरण पुस्तक[illegible] में लिखा है कि ऋषिकेश मुखर्जी इस फिल्म में किशोर कुमार को लेना चाहते थे। अमित कुमार ने भी एक इंटरव्यू में कहा कि उनके पिता को सबसे पहले इस फिल्म का प्रस्ताव मिला था। इस किस्से का सबसे चर्चित हिस्सा एक गलतफहमी से जुड़ा है। बताया जाता है कि एक बंगाली आयोजक से भुगतान विवाद के बाद किशोर कुमार ने दरबान से कह रखा था कि वह व्यक्ति दोबारा आए तो उसे अंदर न आने दिया जाए। संयोग से ऋषिकेश मुखर्जी कहानी सुनाने पहुंचे, तो दरबान ने उन्हें भी वही व्यक्ति समझकर लौटा दिया। इससे ऋषिकेश मुखर्जी आहत हो गए और उन्होंने किशोर कुमार के साथ फिल्म बनाने का विचार छोड़ दिया। बाद में आनंद का रोल राजेश खन्ना को मिला, जो उनके करियर की सबसे यादगार फिल्मों में शामिल हुई। हालांकि, इस कहानी का दूसरा पक्ष भी है। गुलजार ने अपनी किताब में लिखा है कि फिल्म शुरू होने से कुछ दिन पहले किशोर कुमार सिर मुंडवाकर ऋषिकेश मुखर्जी के सामने पहुंचे और मजाक में गाने लगे, 'अब क्या करोगे, ऋषि?' इसके बाद फिल्म के लिए नए अभिनेता की तलाश शुरू हुई। इसलिए फिल्म छूटने की असली वजह को लेकर आज भी अलग-अलग दावे किए जाते हैं। मुंबई में भी मजाक नहीं छोड़ा, बना लिया अपना रेट कार्ड-संगीत के प्रति जितना जुनून था, हास्यबोध भी उतना ही गजब का था। फिल्म पत्रकारों और संस्मरणों के मुताबिक, शुरुआती दिनों में दोस्तों की महफिल में किशोर कुमार मजाक में अपना रेट कार्ड बताते थे। कहते थे- अगर अशोक कुमार का गाना सुनना है तो 25 पैसे, किसी और का 50 पैसे और के.एल. सहगल का गीत सुनना है तो एक रुपया देना पड़ेगा।के.एल. सहगल उनके सबसे बड़े आदर्श थे और वे उन्हें अपना गुरु मानते थे। इसलिए एचएमवी ने जब सहगल के गीतों का एल्बम रिकॉर्ड करने का प्रस्ताव दिया, तो उन्होंने यह कहते हुए मना कर दिया कि लोग यह न कहें कि उन्होंने अपने गुरु से बेहतर गाया। शास्त्रीय संगीत नहीं सीखा, फिर भी बने भारतीय सिनेमा की सबसे अलग आवाज-किशोर कुमार ने कभी शास्त्रीय संगीत की औपचारिक शिक्षा नहीं ली। इसके बावजूद उन्होंने सुरों पर ऐसी पकड़ बनाई, जो आज भी संगीत विशेषज्ञों के लिए अध्ययन का विषय है। सचिन देव बर्मन ने उनकी प्राकृतिक प्रतिभा पहचानी और मौलिक शैली बनाए रखने की सलाह दी।बाद में आर.डी. बर्मन, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल, कल्याणजी-आनंदजी और बप्पी लाहिड़ी समेत लगभग हर बड़े संगीतकार ने उनकी नैसर्गिक गायकी का भरपूर इस्तेमाल किया। चार राष्ट्रीय और आठ फिल्मफेयर पुरस्कार जीतने वाले किशोर कुमार बिना औपचारिक प्रशिक्षण के भी गायकी की परिभाषा बदलने वाले गायक माने जाते हैं। सचिन देव बर्मन ने पहचानी आवाज, फिर शुरू हुआ सुनहरे दौर का सफर-गायक बनने का सपना लेकर मुंबई पहुंचे किशोर कुमार को शुरुआती दौर

में पहचान बनाने के लिए लंबा इंतजार करना पड़ा। उस समय फिल्म इंडस्ट्री पर मोहम्मद रफी, तलत महमूद और मुकेश का दबदबा था। इसी बीच एस.डी. बर्मन ने उनकी नैसर्गिक गायकी पहचानी। आर.डी. बर्मन और फिल्म इतिहासकारों के मुताबिक, एस.डी. बर्मन उन्हें किसी की नकल न करने और मौलिक शैली में गाने की सलाह देते थे। यही उनकी सबसे बड़ी ताकत बनी। बाद में मुनीमजी, पेइंग गेस्ट, नौ दो ग्यारह, गाइड, आराधना समेत कई फिल्मों ने उन्हें हिंदी सिनेमा का सबसे लोकप्रिय प्लेबैक सिंगर बना दिया। लता मंगेशकर के साथ बनाई सबसे सफल जोड़ी, सम्मान ऐसा कि अपनी फीस भी कम कर ली-किशोर कुमार और लता मंगेशकर की जोड़ी ने हिंदी फिल्म संगीत को सैकड़ों यादगार गीत दिए। दोनों के बीच गहरा पेशेवर सम्मान था। फिल्म पत्रकारों और संगीत जगत में प्रचलित एक किस्से के मुताबिक, रिकॉर्डिंग से पहले किशोर कुमार कई बार निर्माताओं से पूछते थे कि लता मंगेशकर को कितना पारिश्रमिक दिया जा रहा है। अगर उनकी फीस ज्यादा होती, तो वे मजाक में कहते थे, 'मुझे लता जी से एक रुपया कम दे दीजिए।' जब पता चला कि रफी से ज्यादा फीस मिली है, तो निर्माता से बोले- पहले उनका भुगतान बढ़ाइए-मोहम्मद रफी और किशोर कुमार को अक्सर प्रतिद्वंद्वी माना गया, लेकिन निजी जीवन में दोनों के बीच गहरा सम्मान था। फिल्म पत्रकार राजू भारतन समेत कई लेखकों के संस्मरणों के मुताबिक, एक डुएट गीत की रिकॉर्डिंग के दौरान किशोर कुमार को पता चला कि उन्हें रफी साहब से ज्यादा भुगतान किया जा रहा है। उन्होंने निर्माता से कहा कि रफी

जैसे महान गायक को उनसे कम फीस नहीं मिलनी चाहिए। बताया जाता है कि बाद में निर्माता ने रफी का पारिश्रमिक बढ़ाया। 'हाफ टिकट' में लता नहीं पहुंचीं, तो खुद ही गा दी पुरुष और महिला की आवाजें-1962 में रिलीज हुई फिल्म हाफ टिकट का गीत 'आके सीधी लगी दिल पे' भारतीय फिल्म संगीत के सबसे अनोखे प्रयोगों में गिना जाता है। शुरुआत में यह गीत लता मंगेशकर और किशोर कुमार की आवाज में रिकॉर्ड होना था, लेकिन रिकॉर्डिंग के समय लता उपलब्ध नहीं हो सकीं। ऐसे में किशोर कुमार ने पुरुष और महिला दोनों हिस्से खुद गाए। आज भी दोनों आवाजों में फर्क करना आसान नहीं होता। संगीत समीक्षक इसे उनकी वोकल रेंज और अभिनय क्षमता का दुर्लभ उदाहरण मानते हैं। यह उनके करियर की सबसे अनोखी प्रस्तुतियों में गिनी जाती है। आर.डी. बर्मन से पहली मुलाकात भी किसी फिल्मी सीन से कम नहीं थी-राहुल देव बर्मन (पंचम दा) और किशोर कुमार की जोड़ी ने हिंदी फिल्म संगीत को अनगिनत सुपरहिट गीत दिए। उनकी पहली मुलाकात भी दिलचस्प थी। आर.डी. बर्मन ने बताया था कि पहली बार मिलने पर उन्होंने किशोर कुमार को साधु जैसे वेश में बैठे देखा। किशोर कुमार ने पहले मजाक किया, फिर अलग-अलग लोगों की मिमिक्री सुनाई और आखिर में हंसते हुए अपना परिचय दिया। पंचम दा कहते थे कि पहली मुलाकात में ही उन्हें एहसास हो गया था कि किशोर कुमार अलग ही दुनिया के इंसान हैं। यही रिश्ता आगे चलकर हिंदी फिल्म संगीत की सबसे सफल संगीतकार-गायक जोड़ियों में बदल गया। बिना रियाज के नहीं, अपने तरीके से तैयारी करते थे-किशोर कुमार कहते थे कि वे शास्त्रीय रियाज नहीं करते, लेकिन बिना तैयारी के भी नहीं गाते थे। रिकॉर्डिंग से पहले वे घंटों अकेले बैठकर धुन, शब्द और मूड समझते थे। कई संगीतकारों के मुताबिक, वे गाने के भाव को पकड़ने में सबसे ज्यादा समय लगाते थे। जब तक उन्हें लगता कि गाना भीतर से महसूस नहीं हुआ, तब तक रिकॉर्डिंग शुरू नहीं करते थे। पेड़ों से बातें करते थे, इसलिए लोग उन्हें सनकी कहने लगे-किशोर कुमार के बारे में सबसे मशहूर बातों में एक यह रही कि वे अपने बंगले के पेड़ों से बातें करते थे। वर्षों तक इस किस्से को उनकी 'सनक' का प्रतीक बनाकर पेश किया गया। हालांकि, बेटे अमित कुमार और करीबियों के इंटरव्यू एक अलग तस्वीर पेश करते हैं। अमित कुमार ने कई बातचीत में कहा कि उनके पिता प्रकृति के बेहद करीब थे। उन्हें पेड़ों के बीच समय बिताना अच्छा लगता था। वे हर पेड़ को पहचानते थे और कभी-कभी मजाकिया अंदाज में उनसे बातें कर लेते थे। फिल्म इंडस्ट्री की भागदौड़ और लगातार काम के बीच यही उनका सुकून पाने का तरीका था। बाद में कई फिल्म इतिहासकारों ने भी लिखा कि इस आदत को बढ़ा-चढ़ाकर उनकी सनक के तौर पर पेश किया गया। इंटरव्यू से बचने के लिए ड्रॉइंग रूम में लगवा दी थीं खोपड़ियां और लाल रोशनी-किशोर कुमार मीडिया से दूरी बनाकर रखते थे। कई वरिष्ठ फिल्म पत्रकारों के संस्मरणों के मुताबिक, उनके घर के ड्रॉइंग रूम में नकली खोपड़ियां, हड्डियां और लाल रंग की लाइटें लगी रहती थीं। बताया जाता है कि ऐसा इसलिए किया गया ताकि पहली बार आने वाला व्यक्ति थोड़ा असहज महसूस करे। इसके बाद किशोर कुमार अपने अंदाज में बातचीत शुरू करते थे। कुछ पत्रकारों के मुताबिक, इंटरव्यू से पहले वे मजाकिया शर्तें रखते थे- 'मेरे घर का खाना मत मांगना, पैसे उधार मत मांगना और मेरी हॉरर फिल्मों का कलेक्शन मत मांगना।' यही वजह थी कि उनके इंटरव्यू दूसरे कलाकारों से अलग अनुभव बन जाते थे। कार गार्डन में दफनाकर कई दिनों तक शोक मनाया था-किशोर कुमार से जुड़ा सबसे चर्चित किस्सा उनकी पहली कार का है। फिल्म पत्रकार राजू भारतन और कई बायोग्राफी के मुताबिक, जब उनकी पहली कार पूरी तरह खराब हो गई, तो उन्होंने उसे कबाड़ में बेचने से इनकार कर दिया। उन्होंने कार को बंगले के परिसर में दफन करवा दिया और कई दिनों तक उसके लिए शोक मनाया। स्टेज पर गाने से डरते थे किशोर कुमार, सुनील दत्त ने 'एक चतुर नार' वाला दांव खेलकर दूर किया डर-किशोर कुमार जितने बेहतरीन गायक थे, उतना ही उन्हें लाइव स्टेज पर गाने से डर लगता था। सुनील दत्त करीब एक साल तक उन्हें भारतीय सैनिकों के लिए आयोजित कार्यक्रम में परफॉर्म करने के लिए मनाते रहे। आखिरकार किशोर तैयार हुए, लेकिन बोले- आप माइक के सामने खड़े रहेंगे, मैं पीछे से गाऊंगा, बिल्कुल फिल्म पड़ोसन के गाने 'एक चतुर नार' की तरह। जैसे ही किशोर कुमार ने आंखें बंद कर गाना शुरू किया, सुनील दत्त चुपचाप मंच से हट गए। तालियों की गूंज सुनकर जब किशोर ने आंखें खोलीं, तो वे अकेले मंच पर थे। इसके बाद उन्होंने पूरे आत्मविश्वास के साथ कई गाने सुनाए और उनका स्टेज फियर हमेशा के लिए खत्म हो गया। मुंबई में रहते थे, लेकिन दिल हमेशा खंडवा में बसता था- करोड़ों लोगों की आवाज बनने के बावजूद किशोर कुमार मुंबई की चमक-दमक में पूरी तरह नहीं रम पाए। उन्होंने कई इंटरव्यू में अपने पैतृक शहर खंडवा का जिक्र किया। वे अक्सर कहते थे कि एक दिन सब कुछ छोड़कर खंडवा लौट जाएंगे। वहां की गलियां, बचपन की यादें और सादा जीवन उन्हें हमेशा अपनी ओर खींचता था। उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। 13 अक्टूबर 1987 को उनका निधन मुंबई में हुआ, लेकिन अंतिम इच्छा के अनुसार उनका पार्थिव शरीर खंडवा ले जाया गया, जहां अंतिम संस्कार किया गया। यही वजह है कि आज भी खंडवा सिर्फ उनका जन्मस्थान नहीं, बल्कि उनकी सबसे बड़ी भावनात्मक पहचान माना जाता है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।